

सरस्वती-सिरीज़ नं० ३५

अवध की बेगम

के० के० मुकजी



प्रकाशक
इंडियन प्रेस लिमिटेड
प्रयाग

पहला अङ्क

पहला दृश्य

[समय—सवेरे १० बजे । दूर पर घना जङ्गल ओर धुएँ में के पहाड़ । कुछ दूर पर पहाड़ से गिरता हुआ झरना । काफी तेज । जङ्गल की दाहिनी ओर से दो सिपाही आते हैं ।]

पहला सिपाही—नहीं, आज की रुखसत ही बदनसीबी की है । वह से इतना बक्क गुजर गया, यह जङ्गल, वह जङ्गल, सारे जङ्गलों की एक छान डाली, शेर, हिरन तो दूर रहा—एक खगोश तक नज़र नहीं आया । खाली हाथ लौटना तो नवाब बहादुर की आदत के खिलाफ है । आज शाम को खाली हाथ न लौटना पड़े, तभी खैरियत है ।

दूसरा सिपाही—देख रहा हूँ, हर एक अमीर को एक न एक अजीब फ़िर्र रहता है । मजे में नवाबी कर रहे हो,—करो न बाबा ! झल-झल छानकर यह शिकार का बदशौक ! लाहौल विलाकुवत ! मका भी कोई मतलब है ! एक दिन की भी फुरसत नहीं । फज़िर

चार बजे उठकर, जब तक शिकार न मिले—तब तक दौड़ो, हुजूर हब के पीछे-पीछे । और तारीफ़ यह है कि पट्टा एकता भी नहीं । र, नहीं तो हिरन—कुछ न कुछ चाहिए ख़रूर ।

जीमन की बातों से ज्ञात होता है कि शायद अब रो

जीमन—हम कहाँ आ गये भाईजान,—हमारा खीमा किस तरफ है ?

र—या अल्लाह, हम रास्ता भूल गये । वे दो सिपाही हमारी
व रहे हैं न ! चलो उनसे पूछे ।

जीमन—अबे ! बतला सकता है, हमारा खीमा किस तरफ है ?

र—जङ्गल में हम रास्ता भूल गये हैं ।

ला सिपाही—कौन हो तुम ?

जीमन—बदतमीज, अदब से बात कर ।

ला सिपाही—कहाँ का आया है नवाब का पोता ! अदब से
!

जीमन—नवाब का साहबजादा ! जानता नहीं हमारे वालिद
गिर कासिम है ? हम छोटे हैं इसलिए अब्बाजान तलवार नहीं
देते, नहीं तो इसी वक्त तुम्हें खत्म कर देता, पाजी—बदतमीज ।

र—चुप रहो भाई मेरे (सिपाहियों से) तुम लोग कुछ खयाल
।। मेरा भाई बच्चा है । अगर जानते हो तो बतला दो हमारा
किस तरफ है । रास्ता भूलकर बहुत देर से हम इस जङ्गल में
हैं ।

दूसरा सिपाही—(दूसरे सिपाही से) यह लौंडा हमारी यह तौहनी
खत्म कर दो इन दोनों को आज । (तलवार निकालकर) यही
आज के शिकार हैं ।

शुजाउद्दौला—इन दोनों सिपाहियों को बरखास्त कर दो ।

ख़ेदार—जो हुक्म ।

बहार—हुज़ूर ! आप इनको बरखास्त कर रहे हैं । अब्बाजान कहा हैं—मुलाज़मत चली जाने पर लोगों को बड़ी तकलीफ़ होती है । इनको मुआफ़ कर दीजिए ।

शुजाउद्दौला—मुआफ़ तो मैं नहीं कर सकता । कसूरवार वह तुम्हारा म चाहे तो मुआफ़ कर सकते हो ।

बहार—मैंने उन्हें मुआफ़ किया । (अजीमन को) भाई जान, सिपाहियों को मुआफ़ कर दो ।

अजीमन—अच्छा, मैंने भी उन्हें मुआफ़ किया ।

दोनों सिपाही—नवाबजादे सलामत ।

[दोनों कोरनिश करते हुए जाते हैं ।]

(मीर कासिम आते हैं ।)

मीर कासिम—अरे, तुम लोग यहाँ हो ! और मैं सुबह से तुम लोगों ढूँढ रहा हूँ । और—और—आप—आप ही क्या ।

बहार—अब्बाजान ! हुज़ूर भी नवाब बहादुर हैं, कितने शरीफ़ हैं । हैं न अजीमन भाई !

अजीमन—हाँ हाँ, भाई-जान ।

(शुजा और मीर कासिम एक दूसरे को वाक़ायदा सलाम करते हैं ।)

शुजाउद्दौला—नवाब साहब, आपके साहबजादों से ही मुझे आपकी मालूम हो गई है । आपकी मुसीबतों से मैं वाकिफ़ हूँ—लेकिन कभी न सोचा था कि आज सुबह बग़ाल की बदकिस्मत मसनद

मीर सासिम—(लड़कों का हाथ पकड़कर) चलो बेटे ।

(एक तरफ से सूबेदार—दूसरी तरफ से बाकी सब जाते हैं ।)

दूसरा दृश्य

वाँदियों का गाना

सइर्यो—मति मारो पिचकारी मेरी भाँग गई घाघरी

छोडे चानुरी—मति मारो पिचकारी

मारो मति मुट्ठी भरी पिया तू लियो जान विसारी

छीन ले गयो, जान मेरी सइर्यो—मति मारो पिचकारी

पहली बाँदी—यह तो हुआ, पर आज नवाब साहब के तशरीफ ले
इतनी देर क्यों हो रही है ?

दूसरी बाँदी—सुना नहीं, आज शिकार करने जङ्गल में गये हैं ।

खबर भेजी है परदा-सवारी भेजने के लिए ।

हली बाँदी—तो क्या आज कोई नया शिकार पँसाया है ?

दूसरी बाँदी—हो सकता है । नवाबी शौक ही तो है । जब पर्दा-

का हुक्म हुआ है तो जरूर कोई नई चिड़िया पँसी होगी ।

हली बाँदी—अच्छा ! देखो इस खुर्द महल में कोई पिंजड़ा खाली
या नहीं । एक पिंजड़े में तो दो चिड़ियाँ नहीं रह सकती ।

दूसरी बाँदी—जब तक चिड़िया हिल न पाय, तब तक किसी कदर
सकती है । मगर जब चिड़िया पालतू होकर “मिर्यो मिट्ठू”
लगे तब ..

पहला अङ्क

पहली बाँदी—क्यों, बेसुरा क्यों होगा ?

छाया—बेसुरा होगा नहीं ? (हँसकर) हा हा हा हा ! कहती भी क्या है। रूप लेकर व्योपार करती है—गाना—बद यहाँ प्राणहीन होकर आकाश में हाहाकार मचाता है—तुम्हें इसका पता नहीं चल रहा है ? तुम्हारे यहाँ का गीत—और सोने की प्याली में "स्वप्ना हुआ विष—दोनों बराबर हैं।

पहली बाँदी—(स्वगत) कहती तो सच है। (प्रकट) वू सचमुच गली है या बनी हुई ?

छाया—यह तो मुझे मालूम नहीं। उसने हाथ पकड़ा—जाति से निकाल दी गई। वदन पर एक दाग भी न लगा। लोगों ने कहा—रावों से भर गया ! आप ने निकाल दिया, मम ने आँखें पोंछी, देशवालों ने मुँह फेर लिया। जिसने हाथ पकड़ा था, उसको किसी ने कुछ न कहा। मेरी जाति भी गई, रोटी भी गई। रास्तों पर भटकती हूँ, कोई कुछ देता है तो खाती हूँ। नहीं मिलता, उपासी रह जाती हूँ। तुम्हारी भी तो जाति चली गई—तुम्हें मालूम नहीं—नहीं तो तुम सब इतनी उन्दरी, पर तुम्हारी आँखों पर, मुँह पर—सब स्याही क्यों है ? छिः छिः ! कै आती है ?

दूसरी बाँदी—कै आती है तो यहाँ मरने क्यों आई ? जा, भाग यहाँ से। तुम्हें गाने की जरूरत नहीं।

पहली बाँदी—अरी दीवानी है बेचारी। पगली वू गा, हम तुम्हें बाने को देंगे।

एक बनाये निपट निलाजे, एक बनाये लाज के

एक बनाये अपनी मौज के, यह करतब महाराज के ॥रुलु०॥

तीसरा दृश्य

[फैजाबाद—सजा हुआ कमरा । दूर पर बहती हुई सरजू नदी नजर रही है । बहू बेगम और गुलनार ।]

बहू बेगम—क्यों तकल्लुफ कर रही हो बहन ! इसे आप अपना मन समझे । आपके शौहर, आपके बच्चे, वे सब अपने ही घर में हैं । दिन कभी एक से नहीं जाते । आज अगर दिन खराब है दो दिन बाद फिर सुधर जायगा । तब हम आपके घर मेहमान होंगे ।

गुलनार—अब मुझे वह उम्मीद नहीं ! अगर वही किस्मत मेरी भी तो वालिद दुश्मनी न करते, वजीर—जिन्होंने मेरे शौहर का नमक खाया—बेवफा न होते । आज वे हमारी ही छाती में छुरी भोकने को तैयार न होते । सच कहती हूँ बहन, अल्लाह ताला से अब सिर्फ जाना ही माँगती हूँ कि वे मुझे जल्द खत्म कर दें । जिन्दगी का एक मिनट मैंने कभी न उठाया पर इतनी आफत सर पर आ जायगी, यह भी ख्याल मे भी न सोचा था ।

बहू बेगम—सच अल्लाह की मरज़ी है । आफत भी उन्हीं की दी गई है । उस आफत को मिटाने के मालिक भी वही हैं ।

गुलनार—सच कहती हूँ बहन, नवाब की बेगम बनने के बाद खुशी का है, एक रोज भी न जाना । मेरी जैसी एक नाचीज़ बौदी के लिए

(शुजा आते हैं ।)

शुजाउद्दौला—नवाब मीर कासिम के साथ आज देर हो गई, इसलिए नभर तुमसे मिल न सका । सुना है वेगम, इधर का सब इन्तजाम ?

वहू वेगम—नहीं ।

शुजाउद्दौला—मीर कासिम मुझसे फौज माँग रहे हैं । मीर जाफर हराकर वे फिर अपनी सल्तनत पर कब्जा करना चाहते हैं । मैं राजी बक्सर जाकर हम ऐलाने-जङ्ग करेंगे । वहाँ फौज और रसद मजने का पूरा इन्तजाम कर लिया गया है ।

वहू वेगम—मैं एक नाचीज़ औरत, इन सब बड़ी-बड़ी बातों को न तो जानती हूँ, और न समझती हूँ । लेकिन इस खोफनाक काम में आपका साथ देना वाजिब है या गैरवाजिब, यह आपके समझने की बात है । मीर कासिम ने पनाह माँगी थी, पनाह देना आपका फर्ज था । लेकिन उनकी तरफ से किसी के खिलाफ ऐलान-जङ्ग करना फर्ज है या नहीं, सोचकर देखिए । सुना है, मीर जाफर के पीछे एक बहुत बड़ी ताकत है । इस जङ्ग का नतीजा क्या होगा, कोई नहीं जानता । मुझे डर है कि आप आखिर तक मीर कासिम का साथ न दे सकेंगे, जिसका नतीजा यह होगा कि उनको और ज्यादा मुसीबतों का सामना करना होगा ।

शुजाउद्दौला—तुम जो कहती हो, वह सच है । लेकिन मैं जुवान बने चुका हूँ । मैं मजबूर हूँ । और इस लड़ाई में मेरा फायदा भी कम नहीं ।

वहू वेगम—कैसे ?

कुछ कम नहीं। बङ्गाल में भी ऐसे बहुत हैं जो अब भी मीर कासिम का साथ देगे। वह सब ठीक है। फिक्र सिर्फ एक ही है। इतनी लड़ाई का एकाएक इन्तजाम करना, इसमें जो सफा पड़ेगा उतनी कम इस वक्त खजाने में मौजूद नहीं है।

बहू बेगम—आपका इरादा क्या है ?

शुजाउद्दौला—मीर कासिम के पास जो छिपे हुए जवाहिरात मौजूद, उनकी कीमत तीस लाख के करीब होगी। खजाने में भी करीबन तना ही रुपया मौजूद है। लेकिन इस लड़ाई में कम से कम एक करोड़ रुपये की जरूरत है। मैं चाहता हूँ, बाकी चालीस लाख इस वक्त तुम [मको] कर्जा दे दो। लड़ाई में फतह पाने के साथ ही मैं तुम्हारा कर्जा प्रदा कर दूँगा।

बहू बेगम—क्या मैं अवध के नवाब की महाजन हूँ ?

शुजाउद्दौला—तो मुझे ख़ैरात कर दो।

बहू बेगम—जो बात मेरे लिए मुमकिन नहीं, वहाँ मैं मजबूर हूँ। तना रुपया मेरे पास नहीं है।

शुजाउद्दौला—इस बात पर कैसे यकीन करूँ ? शादी के वस्तार करोड़ रुपये तुमको सिर्फ दहेज में मिले थे। उसके अलावा, तुम्हारी प्रपत्नी जो मिलकियत है—वह कम नहीं। अगर चाहो तो तुम आसानी से मेरी मदद कर सकती हो।

बहू बेगम—देखिए, यह आज नई बात नहीं। इसके पहले भी ते-चार दफा आपने मुझसे मागा है। मैंने कभी आपको दिया और भी देने से इनकार कर दिया। इस मामले में आप नाराज भी हुए।

है। मल्लनत उसके पास नहीं, लेकिन दिलपसन्द दिलदार, दिल के दट
को समझनेवाली बीवी उसके साथ है। मैं बदकिस्मत हूँ—कोट
भरा अपना नहीं। (जाता है ।)

बहू बेगम—आप नाराज होकर जा रहे हैं। जादग—नाचार हूँ।
फर्ज ! नवाब की बेगम की जिन्दगी—कोई कद्र नहीं उसकी। शाहर
याश—बदचलन !—दिल की वहाँ कोई कीमत नहीं। दीन प्रो
मान,—उसकी वहाँ कोई जगह नहीं। इसी लिए दिल्ली के तरुन की
राज कोई ताकत नहीं। मीर कासिम—बदकिस्मत नवाब—प्रबध की
कदीर में क्या है—कोई नहीं कह सकता। घने बादल आसमान पर
ग रहे हैं। मेरा फर्ज क्या है ? या खुदा—ऐसी दुआ दे कि
याशी से भरे हुए रङ्गमहल की झूठी चमक-दमक के अदर
भक्तों न भूलूँ ! (जाती है ।)

चौथा दृश्य

सहेलियाँ

गाना

भिलीमिली पनिया—

आ री ननदी मेरी आ री ननदिया—

पनिया भरन को हम आई जमुना तट

जल बिच कोई सखी गावत कल कल

कल कल सुन सखी हमे न पडत कल

खिलन चाहत कलियाँ—।

फैजुल्ला—जब कन्दहार में कैद था, दिन-रात तुम्हारे गूँघमूरत चेहरे का जलवा मेरी आँखों के सामने रहता था। कितनी उम्मीदी, नाउम्मीदी, खुशी और मुसीबत भरे दिनों में कितनी रातें जागने की गुजरी हैं। एक अल्लाह ही जानता है।

जिन्नतउन्निसा—आपको अपने दिल की बातें समझाने के लिए जवान मदद करती है। मेरा दिल अपने दिल की बातें सिर्फ दिल से ही कहता है, दूसरे से नहीं।

(सेहेलियाँ गाती हैं।)

दिलदार दिलदार

दिल की बातें दिल से समझो, अगर दिया है तुमने दिल
अगर न समझो तो हम कहेंगे नहीं दिया है तुमने दिल

दिलदार दिलदार

लव के पीछे मुस्कुराहट आँस की तिरछी जवाँ
काली भैंहिं तन के कहती, क्या नहीं समझा जवाँ
हुस्न पर लिखा है उसने, हुस्न का जो बाग़ाँ
काश गर, अब भी न समझो, नहीं दिया है तुमने दिल

दिलदार दिलदार

जिन्नतउन्निसा—वह दादी जान आ रही हैं, मैं भागूँ।

(जाती है।)

फैजुल्ला—आँखों के सामने से भाग सकती हो, दिल के सामने से नहीं।

(जाता है)

था, उस वक्त हमने शुजाउद्दौला से जो सुलह की थी उसमें गन् यह था कि वे हमारी मदद करेंगे जिसके बदले हम उनको चालीस लाख रुपये देगे और वक्त जरूरत पौज देकर उनकी मदद करेंगे जिसमें पौजदार होगा रूहेला सरदार के ही घर का कोई लायक शख्स । हाल यह है कि मीर कासिम को मदद देने की गरज से शुजाउद्दौला मीर जाफर से जङ्ग छेड़ने जा रहे हैं और हमसे पौजदार के मातहत पौज मांगी है—
तुम्हारी क्या राय है ?

फैजुल्ला—आपका खयाल क्या है ?

हाफिज०—मैं खयाल करता हूँ . अपने छोटे भाई दुदी गग की मातहतो में पौज भेज दूँ ।

फैजुल्ला—नहीं दादाजान, यह आपका खयाल नहीं है । आपकी अच्छी मरजी यह है कि मैं बावर्शी इस पौज को लेकर जाऊँ ।

हाफिज०—रावाश बेटा । अल्लाह तुमको सलामत रखे । हाँ, यही मेरी मरजी है, लेकिन तुम्हारी दादीजान.. .

फैजुल्ला—वह मैं सम्भल गया । लेकिन दादाजान ! मेरी अर्ज है कि आप अपना खयाल बराय मेहरबानी न बदले । मैं रूहेला पौज का पौजदार बनकर शुजाउद्दौला की मदद को जाऊँगा । जङ्ग से जीती हुई मातहत की कामयाबी का हार पहनकर नौशा बन्दूंगा ।—क्यों है न दादीजान !

हाफिज की बीबी—बहादुर सर्दार अली मुहम्मद के तुम लायक न हो ।

फैजुल्ला—और वालिद शरीफ सर्दार हाफिज रहमत साहब के लायक भी नहीं हैं ।

लेकिन प्यारी जिन्नत—तुम्हारी याद ही होगी थकावट दूर करने के लिए
प्यारी अचूक दवा।

(जाता है ।)

पाँचवाँ दृश्य

(बहू बेगम और खोजा दुराव अली)

दुराव अली—अब क्या किया जाय, बेगम साहिबा ?

बहू बेगम—कुछ समझ में नहीं आता। वजीर अमीर बेग क्या
ते हैं ?

दुराव अली—उनके बरताव पर मुझे शुबहा होता है। नवाब साहब
खबर भेजी है कि बक्सर में उनकी हार हुई है। लड़ाई से भागकर
सर के पास एक पहाड़ी जङ्गल में उन्होंने डेरा डाला है। साथ में जो
द भी वह खत्म हो गई है। फौज धीरे-धीरे बगावत के रास्ते पर जा
रही है। यहाँ तक कि उनमें सलाह हो रही है कि नवाब को कत्ल कर
कर किसी को मसनद पर बिठावेंगे।

बहू बेगम—इस बगावत के पीछे ग्राम-न्वास कौन शरारत है, कुछ
ज्ञात है ?

दुराव अली—नहीं, पूरा पता नहीं है। लेकिन सिर्फ इतना मालूम
आता है कि अमीर बेग खुद इस गिरावट को चला रहा है। वजीर मुर्तजा
ओं, हैदर बेग यह नवाब के साथ हैं, लेकिन मुझे शक है कि ये भी बफादार
ही हैं। हिन्दू वजीर बेनीराव बीमार हैं। अगर वे मौजूद होते तो
शायद नवाब साहब के खिलाफ इतनी कार्रवाई न हो सकती।

छठा दृश्य

(बक्सर के पास जङ्गल में मीर कासिम का डेरा । समय—रात—
 और कासिम और गफूर अली ।)

मीर कासिम—बक्सर की लड़ाई में भी शिकस्त खानी पड़ी । मीर
 कासिम की किस्मत ही ऐसा है । लेकिन इस हार के लिए मैं जिम्मेदार
 ही हूँ । शुजा अगर मेरी बात मानकर दुश्मन को हमला करने का
 का न देता और खुद एक ब एक उन पर हमला कर देता तो कभी
 हार न होती । अब क्या किया जाय ? मालूम होता है, शुजा
 भूसे नाराज हो रहा है । जितनी दौलत थी, सब दे दी—वह और
 गिता है । बिना रसद के उसकी फौज बागी हो रही है । वह उसका
 और मेरा दोनों का कत्ल कर सकती है ।

गफूर अली—अल्लाह की मरजी क्या है, कोई नहीं जानता । हाय
 नमकहराम मुसलमान ! तुम्हारे ही लिए बङ्गाल के नवाब मीर कासिम की
 आज यह हालत है ।

मीर कासिम—सिर्फ मुसलमान ही क्यों, हिन्दुओं ने भी कुछ कम
 नमकहरामी नहीं की है । अफसोस, बेवफाओं को सजा न दे सका ।
 तो ख्वाहिश थी कि मुँगेर छोड़ने के पहले बङ्गाल को नमकहरामों ने
 ली कर जाऊँ, जिससे आगे चलकर किसी और नवाब को धोखा
 उठाना पड़े । पेड़ जिन्दा है, बङ्गाल की जमीन उपजाऊ है—पुस्त
 पुष्प यहाँ नमकहराम पैदा होंगे । फिर राय दुर्लभ, जगत् सेठ,

छठा दृश्य

(बक्तर के पास बङ्गाल में मीर कासिम का डेरा । समय—रात—
मीर कासिम और गफर अली ।)

मीर कासिम—बक्तर की लड़ाई में भी शिकस्त खानी पड़ी । मीर कासिम की किस्मत ही खराब है । लेकिन इस हार के लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ । गुजा अगर मेरी बात मानकर दुश्मन को हमला करने का मौका न देता और खुद एक ब एक उन पर हमला कर देता तो कभी यह हार न होती । अब क्या किया जाय ? मालूम होता है, गुजा मुझसे नागज हो रहा है । जितनी दौलत थी, सब दे दी—वह और भागता है । बिना रसद के उसकी फौज बागी हो रही है । वह उसका घोर भेरा दानो का कत्ल कर सकती है ।

गफर अली—अल्लाह की मरजी क्या है, कोई नहीं जानता । हाय नमकहराम मुसलमान ! तुम्हारे ही लिए बङ्गाल के नवाब मीर कासिम की राजतन हालत है ।

मीर कासिम—सिर्फ मुसलमान ही क्यों, हिन्दुओं ने भी कुछ कम नमकहरामी नया की है । अफसोस बेवफाओं के मजा न दे सका । हा तो खगतिश थी कि मुँगेर छोड़ने के पहले बङ्गाल के नमकहरामों ने गली कर जाऊँ जिससे आगे चलकर किसी और नवाब को धोखा उठाना पड़े वह जिन्दा है, बङ्गाल की जमीन उपजाऊ है—पुश्त न पुश्त न नमकहराम पैदा होंगे । फिर राय दुर्लभ जगत् सेठ,

गफूर अली—रोशनी का इन्तजाम नहीं है। सारे दिन खाने को मिला। पनाह देनेवाला पूछता भी नहीं। अब आपकी जान बचाऊँ ?

मीर कासिम—अपनी जान बचाने की फ़िक्र करो। मेरी ओर न ।। किसी को तरफ़ देखने की जरूरत नहीं। मैं सोच रहा हूँ, जब मैं मेरा साथ छोड़ दिया, तुम क्यों अटक़े हुए हो ?

गफूर अली—मैं तो नवाब का मुसाहब नहीं हूँ। नवाब की नौकरी मैं बङ्गाल में नहीं आया था। बचपन में जब दिल्ली में आप रहते, आठ साल की उम्र के कासिम अली और मैं था जवान। उसी रोज़ मैं साथ हुआ था। आप बादशाह की फौज में घुसे, बङ्गाल-सरकार प्रमीर हुए—मीर जाफ़र के दामाद हुए। मीर जाफ़र के कमजोर हाथों बङ्गाल की नवाबी ली—मैं, गफूर अली, जैसे बराबर साथ में रहा, आज हूँ। जब आप बङ्गाल के सूबेदार थे तब भी गफूर आपके साथ था, मैं आप भिखारी हूँ—अब भी मैं वही गफूर हूँ—आपका खादिम।

मीर कासिम—नहीं नहीं, तुम मेरे खादिम नहीं, मेरे अजीज खादिम शकल में तुम मेरे साथ पैगम्बर की दुआ है !

(लक्ष्मीप्रसाद आते हैं)

लक्ष्मीप्रसाद—क्या नवाब साहब यहाँ हैं ?

मीर कासिम—कौन ?

लक्ष्मीप्रसाद—मुझे पहचान न सकेंगे। मैं एक विश्वासघाती हूँ।

मीर कासिम—अच्छा, क्या चाहते हो ?

गफूर अली—रोशनी का इन्तजाम नहीं है। सारे दिन खाने को नहीं मिला। पनाह देनेवाला पूछता भी नहीं। अब आपकी जान कैसे बचाऊँ ?

मीर कासिम—अपनी जान बचाने की फ़िक्र करो। मेरी ओर न देखो। किसी की तरफ़ देखने की जरूरत नहीं। मैं सोच रहा हूँ, जब खवने मेरा साथ छोड़ दिया, तुम क्यों अटके हुए हो ?

गफूर अली—मैं तो नवाब का मुसाहब नहीं हूँ। नवाब की नौकरी छोड़कर मैं बङ्गाल में नहीं आया था। बचपन में जब दिल्ली में आप रहते थे, आठ साल की उम्र के कासिमअली और मैं था जवान। उसी रोज़ सिसि मैं साथ हुआ था। आप बादशाह की फौज में धुसे, बङ्गाल-सरकार के अमीर हुए—मीर जाफ़र के दामाद हुए। मीर जाफ़र के कमजोर हाथों से बङ्गाल की नवाबी ली—मैं, गफूर अली, जैसे बराबर साथ में रहा, आज भी हूँ। जब आप बङ्गाल के सूबेदार थे तब भी गफूर आपके साथ था, आज आप भिखारी हैं—अब भी मैं वही गफूर हूँ—आपका खादिम !

मीर कासिम—नहीं नहीं; तुम मेरे खादिम नहीं, मेरे अजीज खादिम की शक्ल में तुम मेरे साथ पैगम्बर की दुआ है।

(लक्ष्मीप्रसाद आते हैं)

लक्ष्मीप्रसाद—क्या नवाब साहब यहाँ हैं ?

मीर कासिम—कौन ?

लक्ष्मीप्रसाद—मुझे पहचान न सकेगे। मैं एक विश्वासघाती हूँ।

मीर कासिम—अच्छा, क्या चाहते हो ?

। क्या थी ? और दुश्मनी करने का फायदा ही क्या था । दो दिन हले जो दोस्त कहकर गले मिलता था वहीं कत्ल का हुक्म देगा ?

लक्ष्मीप्रसाद—मियाँ साहब ! तुम्हारी उम्र तो हो गई है, लेकिन तुम्हें जान नहीं हुआ । उपकार करना जिसके लिए एक शौक की चीज है और उपकार करने के पीछे जिसके हृदय में कोई आशा रहती है, वे किस समय मित्र हैं और किस समय शत्रु—यह स्वयं विधाता के लिए समझना कठिन है । जाने दो—मैं तो एक शराबी हूँ—बड़ी-बड़ी बातें कैसे भूँगा ? कान में एक बात सुनाई दी—आकर कह दिया । अब गर प्राण बचाना चाहो तो सीधे रफूचककर हो जाओ । विश्वासघाती नेया में कौन नहीं है ? विश्वासघातक का काम तो मैंने भी किया । जाउदौला के गुप्त परामर्श का सगाद आकर तुमको दे दिया । अगर मैं को लौट सकूँ तो एक रोज दो गिलास ज्यादा पीकर इसका प्रायश्चित्त करूँगा । अब तुम यहाँ से सीधे भाग जाओ

(जाता है ।)

मीर कासिम—मैं भागूँगा ? कहाँ भागूँगा ? नहीं, मैं नहीं भागूँगा । उसे यही अच्छा है गफूर, तुम यहाँ से चले जाओ । मेरे पास अब कुछ नहीं है, सिवाय इन दो चार चीजों के जो बदल पर हैं, उनसे शुजा-उल्ला का पेट नहीं भरेगा । इन्हें तुम ले जाओ । अगर मर जाऊँ सिर्फ इतना याद रखना कि मेरी यतीम बहीनी, दो बच्चों के साथ, जाउदौला के महल में है । हो सके तो उन्हें नमकहरामी की रोटी न देने देना । उस दोजरा से उन्हें निकालकर तुम अपनी भाँपड़ी में ले

शायद फैजुल्ला पर भरोसा किया जा सकता है। देखूँ, शायद उससे काम
 । सके। फैजुल्ला !

(फैजुल्ला आता है)

फैजुल्ला—आदाब !

शुजाउद्दौल्ला—अगर्नै तुम्हारी उम्र कम है, लेकिन जो बहादुरी, हिम्मत
 और वफादारी तुमने दिखाई है, उसकी जितनी तारीफ की जाय, कम ही है।
 तुम्हारी फौज आगी हो रही है, लेकिन तुम्हारी फौज ठण्डी है। मैं अपने
 किसी भी शस्त्र पर यकीन नहीं रखता, लेकिन क्या मैं तुम पर यकीन
 रख सकता हूँ ?

फैजुल्ला—नवाब साहब, सहेला अफगानों को हिन्दुस्तान में आये
 अभी थोड़े ही रोज हुए हैं। अभी तक यहाँ की हवा उनको लगी नहीं
 इसलिए सहेला अफगान बेवफा और नमकहराम नहीं है।

शुजाउद्दौल्ला—तुम्हारी बातें सुनकर बहुत खुश हुआ। मेरी हालत
 इस देखा रहे हो। अगर आज रात को मैं रुपये का इन्तजाम न कर
 सका तो कल मेरी जान पर आयेगी।

फैजुल्ला—यह मैं समझ रहा हूँ, और यह भी समझ रहा हूँ कि यह
 आपके बजौरो की ही कार्रवाई है।

शुजाउद्दौल्ला—तुम अवलमन्द हो—तुम्हारा खयाल गलत नहीं है।
 मुझे भी यही शक है। लेकिन इस वक्त भी मेरे बचने का एक
 रास्ता है।

फैजुल्ला—फरमाइए।

शुजाउद्दौला—मैंने तुमसे नसीहत नहीं माँगी है। मैं सिर्फ जानना चाहता हूँ कि तुम मेरा हुक्म मानोगे या नहीं ?

फैजुल्ला—अब सोच रहा हूँ कि ऐसी कमीनी बात सुनने के पहले मैं क्या न गया। क्यों मेरी फौज ने बगावत नहीं की ? अगर आपका ऐसा इरादा मुझे पहले मालूम होता तो मैं कभी इस लड़ाई में शरीक न होता। मीर कासिम को लूटूँगा मैं ? नवाब साहब ! नवाबी हमेशा की चीज़ नहीं है। लेकिन इन्सानियत हमेशा की चीज़ है। जो उसल्ले ईमान नहीं, वे मुसलमान नहीं। जब एक दफे उस गरीब को पनाह दी है तो उसके साथ निभाइए।

शुजाउद्दौला—तुम सचमुच अभी लड़के हो। रौर, तुम जाओ। मैं अपने बज़ीरो के जरिये यह काम कराऊँगा।

फैजुल्ला—काश मैं न जानता होता तो शायद आपके बज़ीर कामयाब हो जाते। लेकिन चूँकि अब मुझे मालूम हो गया है, यह मुमकिन नहीं कि आप ऐसी नाजायज हरकत कर जावे। मैं रहेला अफगानों के सरदार हाफिज़ रहमत ख़ाँ का पोता हूँ। उनका खादिम हूँ। उनकी नसीहत है, जान देकर भी कमजोर को बचाना। बक्सर की लड़ाई में एक लालची, डरपोक, बेईमान मुसलमान की मदद करने के लिए आकर मैं कभी उन नसीहतों को भूल नहीं सकता। मीर कासिम को अगर दुनिया ने कोई पनाह न दे तो मरते दम तक रहेला अफगान उसको बचायेंगे। नवाब साहब, मैं अपनी फ़ौज के साथ मीर कासिम को बचाने के लिए चला। अगर आपमें कुव्वत हो तो आप कोशिश कर सकते हैं। सलाम !

(जाता है)

दमो पर गिरकर अर्ज कर रहा हूँ। एक रात और तकलीफ करे।
ह्दी जाओ।

मुर्तजा खॉ—(स्वगत) घरवालों से कहता हूँ जागते रहो, और चोर
कहता हूँ चोरी करो। जाऊँ, इस नवाब को जितनी जल्दी हो दुनिया
हटाकर रास्ता साफ करूँ। देखूँ हैदर बेग ने उधर कहाँ तक
म किया।

शुजाउद्दौला—पढे-खडे क्या सोच रहे हो ?

मुर्तजा खॉ—सोच रहा हूँ, क्या वे मुनेगे ? अच्छा देखूँ।

(जाता है)

शुजाउद्दौला—अगर किसी तरह आज की रात बच जाऊँ। शुबहा
होता है—लेकिन कोई सबूत नहीं, और सबूत होता भी तो क्या ! कैसे
अपनी जान बचाऊँ। नहीं, कोई उम्मीद नहीं।

(बाहर मुर्तजा खॉ—नवाब साहब, होशियार !

बागी कोई बात नहीं मानते।)

शुजाउद्दौला—तब—तब—मामूली सिपाहियों की तलवारों के नीचे
एक नवाब का सर लोट्टेगा, उससे बेहतर है वह तलवार जो हमेशा
मेरे बदन का बेशकीमत जौहर रहा, जिसने सेकड़ों दुश्मनों का खून चाटा,
वही तलवार मेरी छाती का खून पीकर अपनी आखिरी प्यास मिटा ले।
बक्तर का मैदान-जग फैजाबाद के नवाब की कब्र हो।

(तलवार निकालकर खुदकुशी करना चाहता है। मर्द के

वेश में बहू बेगम और लौंडी के वेश में

दुखवअली आते हैं।)

आठवाँ दृश्य

जङ्गल

मीर कासिम

मीर कासिम—खीमे में रहने की हिम्मत नहीं हुई। न मालूम किस तक कोई मेरा काम तमाम कर दे। जब मुर्शिदाबाद में था, किस्मत से एक फकीर मिला। उसने एक पत्ते का बना हुआ ताज और एक अँगरखा देखाकर मुझसे पूछा था—“मीर कासिम, तुम क्या चाहते हो, नवाबी या फकीरी ?” मैंने हाथ बढ़ाकर उस ताज को सर पर रखकर कहा था—“नवाबी।” हँसकर फकीर ने कहा था—“फकीरी लेते तो अच्छा था।” आज समझ रहा हूँ—फकीरी लेता तो अच्छा था। कहाँ रही वह बङ्गाल की मसनद ? कहाँ रही बङ्गाल, बिहार, उड़ीसा की सूबेदारी ? कहाँ रहे बालूचे और ब्रीची ? फकीरी—फकीरी—उस वक्त नहीं ली और अब ? इस अधेरे में भी मुझे मानो साफ दीख रहा है, वह पत्ते का बना हुआ ताज और वह अँगरखा ! नवाबी या फकीरी ? फकीरी या नवाबी ? क्या लूँ ?

(शुजाउद्दौला के दो सिपाही आते हैं)

पहला—खीमे में तो नहीं हैं।

दूसरा—अरे यह तो यहाँ घूम रहा है—मीर कासिम।

पहला—नवाबी गई, लेकिन बेशकीमती पोशाक देखी है न ? खीमा लूटकर कुछ भी न मिला। इसी शैतान के लिए आज हमारी यह हालत है। छीन ले सब।

मीर कासिम—कौन हो तुम अनजान दोस्त जिसने बदकिस्मत कासिम की जान बचाई ?

फैजुल्ला—वह पीछे मालूम होगा । आप जल्द यहाँ से चलिए ।
 १ आपको मारने के लिए शुजाउद्दौला के सिपाही आ रहे हैं ।

मीर कासिम—तब फकीरी नहीं ? अब भी उम्मीद ? अब भी
 ली का लालच ? चलो दोस्त । तुमने मेरी इज्जत बचाई, तुम्हारे
 साथ चलूँगा । शुजाउद्दौला, शुजाउद्दौला ! तुम पर मैंने विश्वास
 या था । तुम मुसलमान थे, इसलिए तुम पर मैंने यकीन किया । तुमने
 खूब बदला दिया । तुमको सलाम ! (शुजा के सिपाही को) शैतान
 । गुलाम ! पगड़ी लेने आया था—नाउम्मीद हुआ क्यों ? पगड़ी नहीं
 हूँ जूता ले जा ओर अपने मालिक को देकर कहना कि उसके माफिक
 ईमान नवाब की कीमत पाँच जूती है । (फैजुल्ला को) चलो
 । स्त—हाथ पकड़ो ।

(दोनों जाते हैं ।)



फैजुल्ला और अब्दुल्ला दो चालंग हुए हैं। हम लोग सिर्फ नावा-
तगो की तरफ से सततनत वी देख-रेख कर रहे हैं। इन सब बातों पर
जर रखकर हमारे लिए यह मुनासिब न होगा कि एक बाहरी शख्स
। अपने यहाँ जगह देकर शुजाउद्दौला से जङ्ग ऐलान करें।

सरदार—मुझे इस राय से इत्तफाक है।

हाफिज—दुन्दी खाँ, तुम्हारा क्या खयाल है ?

दुन्दी खाँ—लड़ाई और जङ्ग का हमेशा लगा रहना रियाया और
स्तनत दोनो को नुकसान पहुँचाता है। फिज़ल की लड़ाई छेड़कर
जाउद्दौला से दुश्मनी मोल लेना अक्लमन्दी की बात नहीं। जब मराठों
हम पर हमला किया था तो शुजाउद्दौला ने हमारी मदद की थी। हम
नके शुरुगुजार हैं। ऐसी हालत में शुजाउद्दौला के खिलाफ हथियार
लाना हमको मुनासिब नहीं—इसलिए मैं यही बेहतर समझता हूँ कि
। कासिम को यहाँ जगह न दी जाय।

फैजुल्ला—लेकिन दादाजान मैंने उनको पनाह दी है।

नियामत खाँ—आपने नादानी की है। अबलमन्दी का काम नहीं
या है। शुजाउद्दौला ने भी उसको पनाह दी थी। उसने जो कुछ भी
ताव उसके साथ किया हो, उसका जिम्मेदार वही है। हम एक बाहरी
। खस के लिए विला मतलब क्यों किसी से दुश्मनी मोल ले ?

फैजुल्ला—जिस हालत में मैंने मीर कासिम को पनाह दी थी—मुझ
कीन है कि आपमें से कोई भी शख्स अगर वहाँ मौजूद होता तो बर्ती
ता जो मैंने किया। क्योंकि किसी इन्सान के लिए वह मुमकिन नहीं
। किसी मुसीबतजदा को ऐसी हालत में छोड़ दे।

फैज़ुल्ला—आप लोगो की उम्र ज्यादा हो गई है, नतीजा आप सोचेंगे । बड़े अन्धा दाऊदखाँ एक मामूली सिपाही की हैसियत से बादशाही टन में भर्ता हुए थे । अगर वे आपकी तरह नतीजा सोचते तो सिर्फ पाँच पठान सिपाहियों के जरिये इतनी बड़ी सल्तनत कायम न कर सकते । १२ मेरे वालिद शरीफ अगर आपकी तरह बैठे बैठे नतीजा सोचते रहते आज आपके यहाँ बैठकर नतीजा सोचने का मौका ही न मिलता । नतीजा सोचना नहीं चाहता । मैं चाहता हूँ जिसको जो ज़वान दी , उसे निचाहूँगा । अगर सारा हिन्दुस्तान मेरे खिलाफ खड़ा हो, जब क जान रहेगी मीर कासिम मेरे किले में ज़िन्दा रहेगा ।

नियामत खाँ—गरज़ यह कि तुम हमसे भी दुश्मनी करना चाहते हो ।

फैज़ुल्ला—अगर इसके लिए आप मुझसे दुश्मनी करें , मैं लाचार हूँ ।

(मीर कासिम आता है)

मीर कासिम—लेकिन मेरे बहादुर अज़ीज, मैं तैयार नहीं हूँ । मैंने सब बातें सुनी हैं । सुनकर खुशी और ताज्जुब से हैरान हूँ । काश बङ्गाल में एक भी सच्चा मुसलमान, तुम्हारे जैसा दिलवाला—दीन और ईमान का पक्का मुझे मिल जाता तो बङ्गाल की तबारीख आज दूसरी तरह से लिखी जाती । मैंने बहुत कुछ बरदाश्त किया है और सह रहा हूँ । अपनी किस्मत से लड़ते लड़ते मैं शिकस्त फी आखरी हद पर पहुँच गया हूँ । लेकिन अपनी इस बदकिस्मती के साथ मैं अब दूसरे किसी की किस्मत को बाँधना नहीं चाहता । तुम्हारे ज़ेरेसाया रहना मुझे मजूर नहीं । तुमने बक्सर के मैदान में मेरी इज्जत बचाई है, वही कम नहीं ।

(शुजाउद्दौला का दूत आता है)

हाँ, तुम शुजाउद्दौला को यह पत्र दे सकते हो कि हाफिज रहमत ने कासिम को औला किला में पनाह दी है। अगर उनसे बन पड़े तो औला किला पर हमला करे। दूसरे खेला सरदारों को उनसे कोई मनी नहीं। औला किला का सरदार है फ़ज्जुल और मैं हूँ उसका जदार।

दूत—मैं आपका फ़र्मान पेश करूँगा।

दुन्दो खॉ—नहीं, ठहरो। खेला सरदारों की नाइत्तफाकी कभी घर में नहीं जाती। मेदानेजङ्ग में खेले एक दूसरे से नाइत्तफाकी कर सकते। तुम जाकर शुजाउद्दौला से कह सकते हो कि खेलाखण्ड सल्तनत मीर कासिम को जरूर पनाह देगी।

नियामत खॉ—हाँ, जब हाफिज रहमत को हमने एक टफ़े अपना बल बनाया है तो उनकी बात हमें माननी ही होगी। हम शुजाउद्दौला तलवार के साथ मुलाकात करेंगे, मेदानेजङ्ग में।

(दूत जाता है)

नियामत खॉ—इसी वक्त सारे खेलाखण्ड में ऐलान कर दिया जाय : सोलह साल की उम्र ने लेकर साठ साल की उम्र तक का हर एक खस लड़ाई के लिए तैयार हो।

हाफिज रहमत खॉ—हाँ, ऐसा ऐलान करना मुझे मज़ूर है, लेकिन एक अज़ यह है कि कम से कम एक शख्स ८० साल की उम्र का इस लड़ाई में जाने की इजाजत हासिल कर सके। बहुत दिनों तक स हाथ ने तलवार नहीं पकड़ी है। जिन्दगी की आग्यरी सरहद पर

दूसरा दृश्य

फौजाबाद—कमरा

[वक्त रात—गुलनार, बहार और अर्जीमन सो रहे हैं ।]

गुलनार—सो रहे हैं, अपनी हालत कुछ नहीं समझते । हँसते हैं, जानते हैं, कभी कभी पूछते हैं कि “अब्याजान कहाँ हैं” । नवाब की इबजादी, नवाब की बेगम—क्या पहले भी कभी ऐसी मुसीबत में पड़तार हुई है ? मरने के लिए तैयार बैठी हूँ, लेकिन मौत आती नहीं है ? चारों ओर पहरा, भागने का भी कोई रास्ता नहीं । क्या मुच मल्लेंगी ? लेकिन उनकी चीजे उनको वापस दिये बिना मल्लें कैसे ? पर इस दोजख के अन्दर जीना भी हराम हो रहा है । याद, परवरदिगार ! क्या करोड़ों औरतों और मर्दों में से मुझे ही यह ज्ञा देनी मजूर थी ?

(बहू बेगम आती हैं)

बहू बेगम—बहन, तीन दिन हो गये, और कितने दिन इस तरह से जींगी ? अब तो मुझसे भी देखा नहीं जाता । कुछ तो खाओ ।

गुलनार—बहन-जान ! मैंने आपसे बराबर अर्ज की है, इस दोजख में मैं एक बूँद पानी भी नहीं पी सकती । आप बहिश्त की हूर हैं, सान से कहाँ ऊपर, आपसे मुझे कोई नाराजी नहीं । लेकिन आपके घर, जिन्होंने मेरे शौहर को पनाह देकर धोखा दिया और आज चूँकि लों ने उनको पनाह दी है, वे उनका खून पीने दौड़ रहे हैं । ऐसी जत-मे, मैं जान-बूझकर अपने शौहर के दुश्मन के घर कैसे पानी पी

बूल करती हूँ अगर दुनिया के सारे शेतान भी एक साथ तुम्हारे ज़ुल्फ़ हों तो भी तुम्हारी अस्मत् की शान के सामने उनको सर झुकाना पड़ेगा। लेकिन अगर इस घर में नहीं तो घर के बाहर जाकर भी या तुम मेरी कोई मदद मंज़ूर न करोगी ?

गुलनार—अगर आप मुझे यहाँ से निकल जाने का रास्ता दिखा दें, वह मदद कुछ कम न होगी। इसके अलावा और किसी मदद की मुझे ज़रूरत नहीं।

बहू बेगम—मैं अपने शौहर की मरजी के खिलाफ़ तुम्हें छोड़ देती पहरदार तुमको न रोके, इसका इन्तज़ाम मैं कर आती हूँ। (जाती है)

गुलनार—गहरी नींद में सो रहे हैं। नींद से उठाकर, इनके फ़ाराम में खलल डाल कर, मैं रास्ते में जाकर खड़ी हूँगी। या अल्लाह, तुम्हारी मरजी! बहार! बहार! बेटा!

बहार—अम्मीजान!

गुलनार—उठो, अभी हमें यहाँ से जाना होगा।

बहार—कहाँ अम्मीजान, क्या अब्बाजान के पास ?

गुलनार—हाँ, इरादा तो वही है।

बहार—तो अजीमन भाई को जगाऊँ ? अजीमन, अजीमन उठो !

अजीमन—कौन भाईजान—अम्माजान कहाँ हैं ?

बहार—यहाँ हैं। चलो, हम अब्बाजान के पास चल रहे हैं।

अजीमन—अब्बाजान के पास ? क्यों अम्मीजान—सचमुच ?

क्या सचमुच हम अब्बाजान के पास चलेंगे ? अभी तो बहुत रात है।

अब्बाजान कहाँ पर हैं ?



बहू बेगम—इतनी रात को नींद से उठाकर तुम्हें क्यों बुलाया है, जानते हो ?

दुराव अली—क्या हुक्म है, हुजूर ?

बहू बेगम—वह देखो, वह जो दो छोटे बच्चों का हाथ पकड़े साफ और सुफेद बुरका ओढ़कर और उससे भी सुफेद और साफ तन्वीयत की मालकिन, इस रात के अंधेरे में, फैजाबाद रंगमहल के आंगन को नफरत के साथ कदमों के नीचे कुचलती हुई चली जा रही है, जानते हो वह कौन है ?

दुराव अली—कौन है, हुजूर ?

बहू बेगम—फैजाबाद-सल्तनत की तकदीर, जो इस महल के अन्दर पनाह लेकर आई थी और हमारी बेवफाई के सबब हमारी हजार मिन्नतों को ठुकराकर चली जा रही है। दुराव अली, तुम अभी उस पाक बेगम का पीछा करो। तीन रोज से उसने कुछ नहीं खाया है। अपने शोहर के दुश्मन के घर एक बूँद पानी भी उसने नहीं पिया। बाहर जाते जाते कौन कह सकता है, शायद अभी जमीन पर गिरकर हमेशा के लिए सो जाय। तुम जाओ। देखो अगर किसी तरह उसको बचा सको। इस रत्न के गुनाह से मुझे बचाओ।

दुराव अली—मैं अभी जाता हूँ।

बहू बेगम—छिपकर पीछा करना। अपना राज न खोलना। अगर वह जान जायगी कि तुम नवाब के मुलाजिम हो तो तुम्हारी मदद वह कबूल न करेगी। किसी कदर बदकिस्मत को उसके शोहर के पास पहुँचा देना। साथ में पानी और खाना ले जाओ। तीन रोज से

फैजुल्ला—आप क्यों फिक्र कर रहे हैं ? हम जरूर फतह पायेंगे ।
मन तोपों का रुख बोंई तरफ घुमाकर ज़ेरो ही उधर का हमला रोकने
कोशिश करेगा त्यों ही दाहिनी तरफ से मैं उस पर हमला कर दूँगा ।
नो तरफ से घिर जाने पर वह ज्यादा देर टिक न सकेगा ।

हाफिज रहमत खॉ—जान की परवा बिना किये हम लड़ेंगे तो जरूर ;
सके बाद नतीजे का मालिक अल्लाह है । हम लड़ रहे है ईमान के
लिए—खुदा जरूर हम पर मेहरबान होंगे ।

फैजुल्ला—इन्शा अल्लाह ! पैगम्बर का हुक्म है कि सब कुछ
कर भी लाचार और मुसीबतजदा को पनाह दो । हम उसी पाक हुक्म
की तामील कर रहे है तब क्यों हमारी हार होगी ?

हाफिज रहमत खॉ—कुरान शरीफ में लिखा है कि अल्लाह
की मरजी समझना इन्सान की ताकत के बाहर है । क्या मीर कासिम
को औला किला पर भेज दिया ?

फैजुल्ला—नहीं, वे नहीं गये । लड़ाई खत्म न होने तक वे यहीं
रहेगे । उनकी ख्वाहिश है कि वे भी लड़ाई में हाथ बटावें ।

हाफिज रहमत खॉ—बदकिस्मत नवाब ! उसकी बीबी और बच्चे
उसी के दुश्मन शुजाउद्दौला के घर पर । सुना है, शुजाउद्दौला ने ऐलान
किया है कि जो मीर कासिम को गिर स्तार करके उसके सामने पेश कर
सकेगा वह दस लाख रुपये इनाम पायेगा ।

फैजुल्ला—मीर कासिम पर नाराज़गी की उसकी कोई जायज वजह
नहीं रह सकती । उसने अपनी खुशी से पनाह दी थी और अपनी
खुशी से ही उसकी तरफ से ऐलाने जज़ किया था ।

चौथा दृश्य

शुजाउद्दौला का गीमा—दूर पर मैदान ।

(शुजाउद्दौला और लताफत अली)

शुजाउद्दौला—लताफत अली, बहुत अच्छे वक्त पर हम गङ्गा के आ गये हैं । अगर हमारे आने के पेशतर दुश्मन इस जगह पर डटते तो आज की लड़ाई में जरूर हमारी हार होती ।

लताफत अली—हम तो रात में गङ्गा ने पार आने में हिचक रहे खुफिया जाकर हाफिज के हिन्दू दीवान के पास से खबर ले आया रहेलो की मन्शा रात हो को यहाँ फौज इकट्ठी करने की है ।

शुजाउद्दौला—यह ठीक है । अगर इस लड़ाई में हमारी जीत तो वह उस हिन्दू दीवान के लिए ही होगी । मैंने पहले से ही उसे त सी दौलत और लालच देकर अपने हाथ कर लिया था और बहुत सी हों से वह हाफिज पर नाराज भी है ।

लताफत अली—रहेले हमारी फौज के बाईं तरफ से हमला करने लिए बढ़ रहे हैं । मे अपनी फौज को होशियार करने के बाद आपगे कर देने आया ।

(सिपाही एक मुसलमान फकीर को लेकर आता है)

सिपाही—हुजूर, यह शख्स फकीरी लिबास में आपके गीमे की रफ आ रहा था । मुझको शक हुआ । मैंने इसे मना किया तो सुना हों । इसलिए कैद कर लाया ।

शुजाउद्दौला—कौन हैं ये ?

फकीर—आपके खुफिया के पास । जिस खुफिया के द्वारा मैंने
 को गङ्गा पार होने का परामर्श दिया था, उसी ने मुझे आपका पत्र
 अँगूठी दी थी । मैं ही हाफिज रहमत का दीवान हूँ ।

शुजाउद्दौला—तुम ? वह तो हिन्दू है ।

फकीर—जी, मैं भी हिन्दू हूँ (नकली दाढ़ी खोल लेता है), भेस
 ज़रूर आया हूँ, नहीं तो पकड़े जाने का भय था । फिर नगर को
 भेस में लौट जाऊँगा । एक आवश्यक सवाद देने के लिए आया

यहाँ से डेढ़ कोस की दूरी पर एक पहाड़ी जङ्गल में फौजुल्ला तीन
 सौ पठान सेना के साथ छिपा है । बाईं ओर से जब हाफिज रहमत
 पर्वत पर आक्रमण करेगा उस समय एकाएक फौजुल्ला छिपी हुई सेना
 पर पूरब की तरफ से आक्रमण करेगा । छिपकर मैंने वहेलो के युद्ध
 नकशा जहाँ तक मालूम किया है, आपसे कह दिया । अब आप
 अपना कर्तव्य आवश्यकतानुसार स्थिर कर सकते हैं ।

शुजाउद्दौला—तुमको पहले कभी देखा नहीं है, लेकिन अपने खुफिया
 जरिये मुझे तुम्हारी तारीफ मालूम हो गई है । तुम बहुत अक्लमन्द
 । तुमने कल जो खबर दी थी वह बेशक्कीमती थी, लताफत अली,
 जो खुफिया कल राय साहब के पास खत लेकर गया था वह बगलवाले
 गिमे में है, उसे हाज़िर करो ।

लताफत अली—जो इरशाद ! कोई है ? हबूरमत ।

शुजाउद्दौला—क्या तुम अभी वापस जाओगे या लड़ाई खतम न
 होने तक यहीं रहोगे ?

फकीर—जी, मैं लौट जाऊँगा । काम बहुत अधिक है ।

शुजाउद्दौला—ऐसा ही होगा ।

कीर—कोठी लूटेंगे, धन-दौलत सब फैजाबाद के खजाने में जाकर होगी । और रहमत की एक सुन्दर पोती है, यदि उसको आग्र कर ले जायें तो किसी अच्छे पात्र के साथ उसका विवाह कर द्या । अच्छा, तो अब मुझे आजा हो, सलाम ! (लताफत को) अब, यदि कुछ आपत्ति न हो तो दाढ़ी को लगाकर निकलूँ । जाने, शायद कोई पहचान ले ! ठीक है न ?

(दाढ़ी को पहनकर जाता है)

शुजाउद्दौला—लताफत अली, मालूम होता है, खुदा मेहरबान है । इस लड़ाई में हमारी हार नहीं हो सकती । लेकिन यह शर्त्त है—अपने मालिक को जो बरबादी यह कर रहा है, वह तो है ही, ही अपने मजहब तक की परवा न कर आसानी के साथ मुसलमानी । पहनने में भी हिचका नहीं ।

लताफत अली—हज़ूर, लालच बुरी चीज है । इसके काबू में होकर न दीन-दुनिया किसी की परवा नहीं करता ।

शुजाउद्दौला—ठीक है । तुम चलो और फौज को ठीक तरह आग्रो । मैं खुद फैजुल्ला की तरफ खाना होता हूँ ।

(दोनों जाते हैं)

नौकरनी—अरे हाँ हाँ, चौके में घुसकर एक चोटा महाराज के गाल मारा और हाथ से करछुली छीनकर दाल की हँडिया में लगा घटर करने । मलेच्छ ने सब खराब कर दिया ।

गुजारी—हाय भगवान् ! ब्योढी पर के दरबान नौकर सोते हैं क्या ?

नौकरनी—दरबान नौकर कहाँ से आये ? सब मरद तो लट्वाई में ज दिये गये हैं ।

गुजारी—तब तो बड़ा गजब हुआ । अच्छा देखो तो जलमुँहे दीवान की अकिल । इस वक्त भी कोई घर से बाहर रहता है । अरी नीक कहती है, सचमुच मुसलमान है ?

नौकरनी—भूठ बोलूँ तो पकौड़ा की फसम । इतनी लम्बी डाढी, बाज और लहसुन की बदबू से सामने खड़ा होना मुश्किल है ।

गुजारी—अन्दर घुस आया, और तूने कुछ कहा नहीं ?

नौकरनी—मैं मरूँ अपनी जान के डर । तुम्हीं कहो न । वह, वह आ रहा है रॉड का भतार ।

(फकीरी लिबास में दीवान आता है)

दीवान—अरी सब गई कहाँ ?

नौकरनी—हाय मैया ।

गुजारी—अरे सचमुच मुसल्ला ही तो है—तू कौन है रे जलमुँहा ? बात न चीत, भले आदमी के घर में घुस आया । मतवाला है या पगला ?

दीवान—मर मुँहजली, तुम लोगो को हुआ क्या ? महाराज मुझे देखते ही भाग गया । नौकरनी चिल्लाकर चल दी—तू कहती है मतवाला,

नौकरनी—अरे हों हों, चौके में घुसकर एक चोटा महाराज के गाल मारा और हाथ से करछुली छीनकर दाल की हँडिया में लगा घटर पर करने । मलेच्छ ने सब सराब कर दिया ।

गुजारी—हाय भगवान् ! ड्योढी पर के दरवान नौकर सोते हैं क्या ?

नौकरनी—दरवान नौकर कहाँ से आये ? सब मरद तो लडाई में ज दिये गये हैं ।

गुजारी—तब तो बड़ा गजब हुआ । अच्छा देखो तो जलमुँहे दीवान की अकिल । इस वक्त भी कोई घर से बाहर रहता है । अरी ग्रीक कहती है, सचमुच मुसलमान है ?

नौकरनी—भूठ बोलूँ तो पकौडा की कसम । इतनी लम्बी डाढी, प्याज और लहसुन की बदबू से सामने खड़ा होना मुश्किल है ।

गुजारी—अन्दर घुस आया, और तूने कुछ कहा नहीं ?

नौकरनी—मैं मरूँ अपनी जान के डर । तुम्ही कहो न । वह, वह आ रहा है रॉड का भतार ।

(फकीरी लिबास में दीवान आता है)

दीवान—अरी सब गई कहाँ ?

नौकरनी—हाय मैया ।

गुजारी—अरे सचमुच मुसल्ला ही तो है—तू कौन है रे जलमुँहा ? बात न चीत, भले आदमी के घर में घुस आया । मतवाला है या पगला ?

दीवान—मर मुँहजली, तुम लोगों को हुआ क्या ? महाराज मुझे देखते ही भाग गया । नौकरनी चिल्लाकर चल दी—तू कहती है मतवाला,

गुजारी—अरे, यह कौन तुम ?

दीवान—जी हाँ मै, अब खुली आँखें ?

नौकरनी—हाय रे दय्या ! कैसी शरम की बात है । मालिक के एक के अन्दर इतनी लम्बी डाढी कैसे उग आई ?

दीवान—(स्वगत) ओह ! एकदम खयाल नहीं, डाढी की बात भूल आया था । (प्रकट) तू जा, खड़ी-खड़ी देखती क्या है ?

नौकरनी—हाँ जाऊँ, डाढी छूनी पड़ी । जाकर दो घड़े पानी सर जल लूँ । (जाती है)

गुजारी—यह सब है क्या मामला ?

दीवान—हैं, हैं, प्यासी ! चुप-चुप, जो चाल चली है, एकदम शतरज चाल । अगर लग जाय तो एक किस्त में मात । मुसलमानी वेश आया था गुजाउद्दौला के पास—घर आकर डाढी खोलना भूल गया ।

गुजारी—तो डाढी क्यों पहनी थी ?

दीवान—हर्ज क्या है ? डाढी की कदर कुछ कम है, और बातिर कितनी !

गुजारी—तुम्हारी बातिर के कपार पर सौ भाड़ू ! चाप-दादे का नाम डुवाया । क्या होगा इतना पैसा इकट्ठा करके—एक लड़का भी तो नहीं है ।

दीवान—दीवान हूँ । जब राजा बनूँगा तो लड़के आप पैदा होंगे । रुपये से क्या नहीं होता । चलो जीमने को दो, फिर जाना पड़गा कोठी की तरफ । नौकरनी को मना कर देना, डाढी की बात किसी से कहे नहीं । हाँ, डाढी को उठाकर रख दो ।



(जिन्नत आती है)

जिन्नतउन्निसा—हाँ दादी, मगरिव का वक्त हुआ, अभी तक कोई वापस न आया। हम सबने हार बना रखे हैं। लडाई जीतकर आनेवाले बहादुरों को पहनाने के लिए !

हाफिज़ की बीबी—इन्शाअल्लाह, तुम्हारी जयान मुबारक !

जिन्नतउन्निसा—अच्छा दादीजान, इन्सान लड़ते क्यों हैं ? एक दूसरे की छाती में तलवार भोक देता है, फिर भी खूबी यह है कि नों इन्सान ही हैं। एक मामूली सी लडाई इन्सान बन्द न कर सका। इसी पर, कहा जाता है, इन्सान बहुत अक्लमन्द है।

हाफिज़ की बीबी—अरी तू ये सब बातें कहाँ से सीख गई। डाई न हो फिर मरद क्या ? मरद लड़ेंगे अपने मुल्क के लिए, दीन लिए, ईमान के लिए—अपनी वालदाओं और हमशीराओं की इज्जत लिए। अगर ऐसा न किया तो मर्द कैसे ?

जिन्नतउन्निसा—आपकी बातें मुझे अच्छी नहीं लगती। रात र मजे में सोये, सुबह तलवार हाथ में लेकर मरने को दी दें। कोई रूत न होती अगर एक इन्सान दूसरे इन्सान के मुल्क पर हमला न करता, दूसरे के दीन और मनहब से भगडा न रखता, दूसरे की लडा और हमशीरा को अपनी ही वालदा और हमशीरा समझता। इन्सान सब कुछ कर सकता है और यह मामूली सा काम नहीं कर सकता। इन्सान कतई अक्लमन्द नहीं, बिल्कुल येव कूफ है। जानवर प्रापस में लड़ते हैं, भगड़ते हैं ; अगर इन्सान भी वैसा ही करे तो इन्सान और जानवर में फर्क क्या रहा ?

1

1

हाफिज की बीबी—और मेरे शोहर हाफिज साहब वे भी
में हैं ?

फैजुल्ला—हाँ मैदान में—मगर, मगर. . .

हाफिज की बीबी—क्या ? जीभ रुक क्यों रही है ? क्या वे
पे-जङ्ग में, दुश्मनों की खून भरी लाशों के ऊपर, बहादुरी की नाँद
पाये ?

फैजुल्ला—हाँ, बारह आफताब की तरह चमकनेवाले मेरे बहादुर
साहब—हज़ारों दुश्मनों को मारकर आफताब मगरिब की ओर
हुए जिस वक्त मगरिब की नमाज पढ़ रहे थे, उस वक्त एक गोली
उनकी छाती में घुस गई ।

हाफिज की बीबी—और तुम कायर उनकी पाक लाश को स्यापें और
के लिए छोड़कर यहाँ भाग आये हो, अपनी जान बचाने के लिए ?

फैजुल्ला—नाराज न हूँ। उन्हीं के हुक्म से आया । बचपन में
चालाकी की मौत हो गई । आप ही का दूध पीकर मैं बड़ा हुआ ।
मैं कायर नहीं हो सकता । मैं अपनी जान बचाने की गरज से
हँ आया हूँ । मैं आया हूँ आप लोगों की इज्जत, रुहेला औरता
की पाक असमत को बचाने—तशरीफ ले चलिए । शहर में दुश्मनों के
सने के पेशतर मैं आप सबको बेचतरे जगह पर पहुँचा दूँ । उसके
बद मैं अपना फर्ज अदा करूँगा ।

हाफिज की बीबी—इतने रोज मेरी इज्जत बचाने के जो मालिक थे
उनकी लाश मैदान में सडे ! फैजुल्ला, अपनी इज्जत की फिक्र हम खुद
कर लेंगे । तुम जाओ—अगर मुझ पर तुम्हारा कुछ भी खयाल हो तो

नीचे रख सकता है, उसकी पाक लाश दुनिया के आला मजार के नीचे कर इन्सान के अदब को हमेशा अपनी ओर खींचेगी। मैं आपके शहर मरहूम की लाश खुद मैदान से उठा लाया हूँ।

हाफिज की बीबी—लाये हैं ? कौन हैं आप बहादुर, आपने मेरे काम किया है।

मीर कासिम—बहादुर नहीं, कायर, बदनसीब। मुझको पनाह कर ही आज आप इस मुसीबत में गिर सार हैं।

हाफिज की बीबी—कौन हैं आप ? बङ्गाल के नवाब ? मीर कासिम !

मीर कासिम—नवाब नहीं अम्मा साहब ! गुलाम का भी गुलाम ! कदीर का मारा हुआ ! रास्ते के कुत्ते से भी बदतर ! आपका बदनसीब इका ! कासिम अली ! रोहतासगढ़ के किले में बगाल की नवाबी ने कब्र में दफना कर यहाँ भाग आया था। मेरे ही लिए—स्टेलो के बेशकीमत सरताज—फिरिश्ते से भी बेहतर, हाफिज रहमत अली आज मेरा के लिए चले गये। मैंने इस लड़ाई में तलवार पकड़नी चाही थी, मगर हाफिज साहब ने मुझे इजाजत न दी। लेकिन इस गुलाम ने उस हुक्म को न मानकर मामूली सिपाही के लिये मेरे साथ दिया था। बङ्गाल की नवाबी करते वक्त जो फख्र मैंने हासिल नहीं किया था उससे बढ़कर फख्र मैंने हासिल किया आपके शहीद साहब की लाश को अपने कंधे पर उठाकर। दुश्मन शहर में आ गये। तशरीफ ले चलकर जल्द बतलाइए मैं इन्हें कहाँ दफनाऊँ !

हाफिज की बीबी—चलिए—दिखा देती हूँ। आपका हज़ार शुक्रिया ! खुदा हाफिज !

(शुजाउद्दौला आते हैं)

शुजाउद्दौला—खबरदार ! कोई औरतों की बेइज्जती न करना ।
सुनीन, तूरो मत, हमारे साथ आओ ।

(लताफत अली और दीवान आते हैं)

लताफत अली—जनाब, फैजुल्ला गिर पतार कर लिया गया ।
जिन्नत उन्निस्सा—या अल्लाह ! फैज् फैज् । (बेहोश हो जाती है)
दीवान—आह ! मूर्च्छित हो गई है, बेचारी । कमसिनी में ऐसा
आ ही करता है । अभी ठीक हो जायगा । हाफिज साहब की दुलारी
ती ! शादी का पूरा इन्तजाम था । आप अच्छा मर्द देखकर व्याह
र देना ।

शुजाउद्दौला—न तो बच्चों और औरतों की कोई बेइज्जती हो और न
उनमें से किसी का कत्ल । फैजुल्ला को गिर पतारी की ही हालत में
आदब फेजावाद खाना करो । उसके जखमों के इलाज का पूरा पूरा
इन्तजाम फौरन किया जाय । ऐसा बहादुर इसके पहले मुझे कहीं नजर
नहीं आया । तवारीख इसकी तारीफ हमेशा करेगी । हाँ, हाफिज साहब
के यहाँ की ओर ओर मस्तूरात के हमराह इसको भी लिया जाय ।

लताफत अली—जो इश्ताद ! (शुजा० जाता है)

दीवान—जब तक हाफिज साहब मालिक थे, मैं उनका नौकर
था । अब आप मालिक हैं, आपका नौकर हूँ ।

लताफत अली—तुम्हारी ही वजह से हमें कामयाबी हासिल हुई ।

दीवान—मैं कौन हूँ ? मैं कोन हूँ ? सब राम की कृपा है ।

लताफत अली—चलिए, अब खजाने की तरफ ।

2

ई तो मारने दौड़ता है और कोई मेहरबानी से थोड़ा-सा दे देता है ।
भीजान, अब्बाजान तो नवाब थे, फिर हमारे ऊपर यह मुसीबत क्यों ?
ख मांगने पर भी लोग नहीं देते ।

अजीमन—बड़े होने पर मैं भी नवाब बनूँगा—है न भाईजान ?

बहार—नहीं, नवाब होने पर आखिर में इस तरह भीख मांगनी
पड़ती है । हम गरीब ही रहेंगे, मेहनत करके ग्वायेगे—क्या ठीक है
अब्बाजान ?

गुलनार—(स्वगत) बच्चों को इस तरह रास्ते और जङ्गल में ही
चलाना पड़ेगा । ये फूल से बच्चे कब तक इस तकलीफ को बर्दाश्त करेंगे ?

अजीमन—अब्बाजान, बहुत भूख लग रही है ।

गुलनार—ज़रा सा और सब्र करो बेटा, सुबह अभी हो जायगी ।
या अल्लाह, रहम कर ।

(गाती हुई छाया आती है)

पनियो बरखे बरखे अखिया रे

धन धन गरजे धन, मुँदत नैन अधियां

दामिनि दमके, चित चमके

पागल पवन बहैं मतवारं

जात यमपुर ओर अकेला राही

साथ न कोई सरिया रे ।

गुलनार—सड़क पर राहगीर चलने लग गये । अब जरूर सुबह
होने में देर नहीं । कौन हो तुम, किधर जा रही हो ? हम भी गरीब
हैं, जरा रुको न ? साथ ही चलेगी ।

छाया—मैं, यह नहीं जानती। कोई कहता है पागल, कोई
॥ है भिखारी। वह एक दिन—न तो रात थी, और न दिन—घर में
था नहीं, मा गई थी पानी भरने, पिता कहाँ थे, याद नहीं। शिकायत
ने आया था, सो पानी माँगा। मैंने पानी दिया। उसने मेरा हाथ
झा। उसके बाद—उसके बाद—अच्छा बतलाओ तो वह कौन सा
व था ?

गुलनार—मैं क्या जानूँ ?

छाया—ओह जानती नहीं हो। वह भी नयाव था। तेरे पति भी
गाव है न ? तब भी तू नहीं जानती ? बाप ने घर से निकाल दिया—
‘ने आखिं पोछी, लोगो ने कहा—तू अजात हो गई है। तब से दूँढ
ही हूँ। हों दूँढ रही हूँ। अगर एक दफे मिल जाय। कितने
गर, कितने देश !

अजीमन—अम्मीजान, बड़ी प्यास, बड़ी भूख !

बहार—अम्मीजान, अजीमन क्या खायगा, मैं क्या खाऊँगा ?

गुलनार—चलो बेटा, फजर हो गया। चलो गाँव की तरफ चले।

(स्वगत) काश मैं भी ऐसी दीवानी होती।

छाया—बच्चों को खाना चाहिए। तो अब तक कहा क्यों नहीं !
खाने की क्या परवा है ? भीख माँगने से भात मिल जाता है, पर जाति
नहीं मिलती। यह ले, इन्हें खिला। मुझे खाने को बहुत मिल जाता
है। ले—ले न ? अपने बच्चों को खिला।

बहार—अम्मीजान, देखो कितना खाना है। आज मृत्यु पायेगे,
तुम भी कुछ खाओ न अम्मीजान !

दूसरा—शाबाश बीबी—वाह वाह, वाह गत हैं—देख उन दो
को पकड़, मैं इसे सँभालता हूँ ।

(छाया आती है ।)

छाया—(छुरी निकालकर) होशियार ! अभी काटकर चोटी चोटी
दूँगी ।

पहला—अरे एक ओर ! बीबी, छुरी दिग्गकर डगअगोगी ? हमारे
तलवारे हैं ।

बहार और अज़ीमन—अम्मीजान, तुम नाग जाओ, हमें पकड़ने दो ।
जाओ ।

पहला—कोई नहीं भाग सकता, हम नवाब के सिपाही हैं ।

छाया—अगर तुम्हारे नवाब भी मिल जायँ तो उनकी छाती में छुरी
क दूँगी । अब भी कहती हूँ । दूर हो जा ।

(गफूर आता है)

गफूर—कोन है बदजात, जो औरतों पर हाथ उठाता है ।

पहला—तेरा बाप ।

गफूर अली—मेरे बाप औरतों पर हाथ नहीं उठाते थे । वे मर्द थे ।
और औरतों पर हाथ उठाते हैं वे जानवर हैं, और उनकी कुरबानी ऐसे की
जाती है ।

(पहले सिपाही को मार डालता है दूसरा भाग जाता है)

गुलनार—कौन हैं बहादुर आप, जिन्होंने मेरी इज्जत बचाई ?

अज़ीमन—अम्मीजान, सुभे उठाओ ।

गफूर—अब आपको पैदल न जाना होगा मेरे लाल साहब। बूढ़ा पर भी, आप दोनों को अपने कंधों पर बिठा ले जाने की ताकत अभी भी मौजूद है। आइए अम्मा साहिबा, आगे चलकर सवारी की राह करें।

(सब जाते हैं)

दूसरा दृश्य

फैजाबाद—महल के अन्दर कमरा

[बहू बेगम और दुराव अली]

बहू बेगम—दुराव अली ! तुम मेरे लडके की तरह हो। तुम मुझे भी बालदा समझते हो न ? तब मुझे थोड़ा सा ज़ह्ज़ लाकर दो मैं जीना फिज़ल समझती हूँ।

दुराव अली—नवाब साहब ने आते ही मीर कासिम की बेगम को बचो को तलाश किया था। मुर्तजा खाँ ने ही उनको समझाया कि आप ही की मदद से वे भाग गये हैं। सुना है, हुजूर आप पर खत है।

बहू बेगम—यदकिस्मत मीर कासिम की यदनसीब बेगम—कौन जानता कब वह अब भी दुनिया में ज़िन्दा है या नहीं। काश वह मर गई हो उसके लिए हमी ज़िम्मेदार हैं।

दुराव अली—दो रोज तक वे समझ न सकी थी कि मैं ही छिपकर अभी मट्ट कर रहा हूँ। तीसरे रोज एक जंगली भैंसे ने जब उन पर

बहू बेगम—तुम्हें अपने लिए कोई फिक्र नही, नर नर न
है।

दुराग अली—आप ही का खयाल कर तो मैं आज भी इस राजतन में
हूँ, नहीं तो भीख माँगना इससे अच्छा था।

(जाता है)

बहू बेगम—कै रोज़ की ज़िन्दगी है इन्सान का ? लेकिन इस
सी ज़िन्दगी में कितनी खताएँ बर करता है !

(शुजाउद्दौला आते हैं)

शुजाउद्दौला—बेगम ! शहर में आते ही सुना कि तुमने मीर कासिम
गम और बच्चों को रिहा कर दिया।

बहू बेगम—हज़ूर ने ठीक ही सुना है।

शुजाउद्दौला—मेरे बिना हुक्म के, मेरी ग़ैरहाज़िरी में, उनको रिहा
ना तुम्हारे लिए मुनासिब न था, ग़ास कर जब तुम जानती हो
मीर कासिम के लिए ही इस जङ्ग का ऐलान हुआ है। इन सब
नती कार्रवाइयों में तुम्हें दखल न देना चाहिए।

बहू बेगम—अगर खता हुई, सजा दीजिए। लेकिन अर्ज है कि
सल्तनती कार्रवाइयों के गन्दे रास्ते पर चलते-चलते कभी-कभी तो
फ और इन्सानियत की तरफ भी ग़याल किया कीजिए। याद
र, दोस्त हो चाहे दुश्मन, वह भी आप ही की तरह खुदा का बन्दा है,
न है। किसी पर जुल्म करने के पहले, एक दफे अपने को जुल्म
जानेवाले की हैसियत पर ख़टा कर सोचिए, आपका दिल क्या
है।

शुजाउद्दौला—तब देखता हूँ, तुम्हारे साथ ताल्लुकात मुझ लोड़ने
गे। तुम मेरी खास बेगम हो, इसी लिए तुम्हारी बहुत सी बातें मैं
दाश्त कर लेता हूँ, फिर भी हर एक बात की कोई हद होनी चाहिए।

बहू बेगम—मैंने हुजूर से पहले ही अर्ज किया है कि अगर मेरा कोई
ए मुआफी के कागिल न हो, मुझे सजा दे सकते हैं। वह मुझे मर-
खो पर मजूर होगी; क्योंकि मैं हुजूर की बीबी हूँ, खादिमा हूँ।
केन दूसरे पर मैं आपको जुल्म नहीं करने दूँगी, चाहे मेरी किस्मत में
ई मुसीबत बदी हो।

(जाती है)

शुजाउद्दौला—देख रहा हूँ, कहीं चैन नहीं है। बाहर, तख्त के
आल में ही, दोस्तों के लिवास में बागियों का गिरोह, और अन्दर मेरी
जुत सी बेगमों, माशूकाएँ! मगर एक भी मेरे दिल की नहीं। आमेतू
मिजाज दिन व दिन बढ़ता ही जा रहा है। इसको सबक देना बहुत
सुरी है। हाफिज़ रहमत की पोती—हाँ देखा, खूबसूरत है। आमेतू
सजा, इस लड़की से मेरी शादी।

(जाता है)

तीसरा दृश्य

एक गाँव की मराय में

[जिलत]

जिलतउन्निसा—दादी कहाँ गई ? कैजुल्ला कहाँ रह गया ?
[मुझे कैद कर क्यों ले जा रहे हैं ? वही इन्होंने मुझे खत्म क्यों नहीं

100

अमल । इनके अत्याचार से बङ्गाल स्वतन्त्र हुआ दिल्ली प्रशासन
यह भी जायगा । जायगा नहीं ? तुम्हारे ग्राम क्या विफल होगे ?
तेकर खेलते हैं, दिल में सोचते हैं, बड़ी बहादुरी की है लेकिन
नहीं हैं कि साँप के मुँह में जहर है । मे डूँड रही हूँ, टूँड रही हूँ ।
जिनतउन्निसा—तुम कौन हो, किसको डूँड रही हो ?
आया—मुना है कोई राजपुत्र है या नवाब । धनी है बड़ा आदमी
मेरा हाथ पकड़ा था—मेरी जाति चली गई लेकिन जान से नहीं
। इसी लिए तो जल-भुनकर मर रही हूँ । यहाँ-वहाँ पर जगा
रही हूँ । अगर एक बार मिल जाता । सोचता होगा—गर्भव
त है क्या कर सकती हूँ । हा : हा हा . जानता नहीं आया क्या
कर सकती ?

जिनतउन्निसा—(स्वरगत) दोबारी है । आज कितने दिना बाद फिर
रात करने का कोई मिला तो नहीं । (प्रकट) तुम जिसका डूँड रही हो
का नाम क्या है ? कहाँ रहता है ?

आया—नहीं जानती । मगर देखकर पहचान सकती हूँ । वही
। दफे देखा था, न रात थी और न दिन । बेहोश हो गई थी । किस
पि चला गया—मालूम नहीं । लेकिन याद है, उसने मेरा हाथ पकड़ा
। यह—ऐसे—ऐसे, वह चेहरा—वह चेहरा—हर से काँप उठी । कोई
। आया—कोई नहीं आया—फिर मैं बेहोश हो गई । आँखें खोली
देखा ना रो रही है । बाप ने घर से निकाल दिया । गाँववाले गर्दन
काकर खड़े रहे—किसी ने कुछ न कहा । सब भेडा का गिरोह—
। भेडा का गिरोह । सिर्फ रोना जानते हैं, चिखाना जानते हैं, भीरा

छाया—तूने मुझे बहन कहा, फिर क्या चिन्ता है। तू मेरी तरह पागल बन जा। यहाँ से चली जा ये मनुष्य नहीं, जानवर हैं। जा ब्रँधे जङ्गल में शेर और भालुओं के पेट में चली जा तो भी तर्न नहीं। फिर भी ओहो हो हो, याद आते ही, छाती कांप उठती है। अब सास से आग की चिनगारियाँ निकल रही हैं। रुखे वालों से आग की भार मिट्टी पर गिर गयी है। पैर नहीं खरमा जाता तलवे जल रहे हैं—तू भाग, मेरा कपड़ा पहन ले—अपना कपड़ा मुझे दे। मैं जग तामझाम में चढ़कर देखूँ।

जिन्नतउन्निसा—अगर वे तेरे ऊपर जुल्म करे !

छाया—कोई डर नहीं, एक बार बेहोश हो गई थी, सच है मगर अब बेहोश नहीं हो सकती। तू देख न कर मेरा कपड़ा पहनकर पागल की तरह गाती-गाती चली जा। कोई कुछ न करेगा चाहे आत्महत्या कर लेना, फिर इस ज्वाला से तू बच जायगी, बच जायगी। दे दे अपनी पोशाक मुझे ! दे ! अब कैदी मैं हूँ और तू पगली है—हा हा ' हा', क्या मजा ! क्या मजा !

जिन्नतउन्निसा —लेकिन बहन, मैं कभी बाहर नहीं निकली।

छाया—उससे क्या ? सब सह जायगा। सब सह जायगा। जैसे मुझे सह गया है। तू था, अब देर न कर।

(दोनों अन्दर जाती हैं)

शुजाउद्दौला—तुम रुहेलखण्ड के बली-उल्-सल्लतनत हो। मैं तुम्हें ने मातहत नवाब की हैसियत से रुहेलखण्ड की मसनद पर बिठा सकता हूँ। गिरफ्तार किये हुए शख्स भी सत्र रिया किये जा सकते हैं, अगर मैंने साथ नातेदारी कर सके। मेरी जो खातिर है, वह बहुत ही सान है। अगर चाहें तो बिला तुम्हारी मरजी के भी वह नाम मैं करता हूँ, मगर मैं वैसा करना नहीं चाहता।

फैजुल्ला—फरमाइए।

शुजाउद्दौला—मैं हाफिज रहमत की पोती, तुम्हारी हमशीग जिन्नत-सा से शादी करना चाहता हूँ—तुम्हारी मर्जी से। और मैं वादा करने तैयार हूँ कि जिन्नतउन्निसा की औलाद ही बली-उल्-सल्लतनत। क्या तुम्हें मेरी गय में इत्तफाक है?

फैजुल्ला—क्या आपने जिन्नतउन्निसा को देखा है?

शुजाउद्दौला—हाँ, मगर गिरफ्तारी के बाद नहीं, उसके पहले बरली की। मैंने उसे अब भी नहीं देखा है—और न इस तरह दर्खनाता हूँ। मैं उसको अपनी बेगम की हैसियत से देखने का ही खातिर रखता हूँ। मैं मुझे अज़हद खुशी होगी, अगर उसके रिश्तेदार व खुशी उसे मेरे सोप दूँगे। नवाब शुजाउद्दौला ने हाफिज रहमत के रिश्तेदारों को मानी आज़ादी में दस्तन्दाज़ नहीं किया है।

फैजुल्ला—नवाब साहब, आपने फतह हासिल की है—आपका ताकत है। इस वक्त कमजोर है। फिर भी वह मुमकिन नहीं है। मैं जान-बूझकर रुहेलखण्ड के दुश्मन के हाथ अपनी हमशीग को



फै जुल्ला—या खुदा ! न जाने जिनत की क़िस्मत में क्या लिखा है । गर जालिम जबरदस्ती उसे अपनी बेगम बना ले तो कोन उसकी इज्जत वा सकता है । और अगर वह राज़ी हो ! ओह जज़ीर, कितनी सख्त ! तुम ! अगर उस समय नानी राज़ी हो जाती, अगर औला क़िले पर मैं क दफे इनको पहुँचा सकता तो जालिम शुजाउद्दौला ! देख लेता किस रह तुम ऐसी कमीनी शर्त मेरे मामने रखते । पर यह कौन है जिसकी वृत्तस्ख़ती से चाँद की मीठी गेशनी की तरह यह कैदख़ाना भी रोशन ! उठा । कौन है आप ?

(वहू बेगम और दुराव अली आते हैं)

वहू बेगम—दुराव अली ! चाभी खोल दो, जज़ीर उतार दो । जाओ हादुर जवान, भाग जाओ । इस छिपे रास्ते से यह शख्स तुमको बाहर निकाल देगा । जाओ, अपनी सल्तनत को वापस जाओ । वहूदुरो की क़िस्मत उनकी तलवार में रहती है । यह लो तलवार ।

फै जुल्ला यह कौन सा जादू है । आप कौन हैं ?

वहू बेगम—उसे सुनने से कोई फायदा नहीं । तुम जल्द जाओ ।

फै जुल्ला—लेकिन मेरी हमशीरा यहाँ कैद है ।

वहू बेगम—अगर हो सके, तलवार की मदद से उसको रिहा कराना । नवाब ने खासमहल में उसे कैद किया है—कड़ा पहरा है । मैं अभी तक कोई ज़रिया निकाल नहीं सकी । अच्छा, तुम चल दो; दुराव अली, रास्ता दिखाओ ।

फै जुल्ला—लेकिन अल्लाह की दुआ का तरह बरसनेवाली एहसान की वालदा ! आप कौन हैं यह बिला जाने मैं यहाँ से न जाऊँगा ।

पहली—अरी क्या सचमुच शादी होगी ?

दूसरी—सचमुच शादी नहीं होगी तो क्या झूठ मूठ शादी होगी ?

पहली—मगर अगर वह राजी न हो ?

दूसरी—राजी और गैराजी एक ही बात है—है किस्मतवाली, फिर नवाब साहब बेगम बनायेगे ।

तीसरी—मगर यह कुछ अजीब ही किस्म की मालूम होती है ।
वे फाड़कर चारों तरफ देखती है और अपने मन में गाती रहती है ।

दूसरी—जङ्गल से पकड़ी हुई नई चिड़िया पहले ऐसा ही करती है,
दो दिन बाद देख लेना, हमी पर रोत्र—हमी पर हुक्म । नवाब साहब,
ते हैं, इन्हीं को अव्वल बेगम बनायेगे । वह आ रही है ।

तीसरी—नवाब साहब का हुक्म याद है न ? कोई उससे बात न करे ।
जब वे खुद तशरीफ लाकर अपनी मुहब्बत जाहिर करेंगे ।

पहली—तो चलो, हम चल दे ।

तीसरी—वही अच्छा है । हूँ न जाने कौन सा ऐसा हुस्न इसमें
रहा ? इसी को कहते हैं नसीब ।

(सब जाते हैं)

(छाया आती है)

छाया—कब आई हूँ—कब—कब यहाँ से जाऊँगी । रोशनी—कितनी
रोशनी है—फूल—गीत—लेम्बिन सब जगह से भरा है ।

(शुजाउद्दौला आते हैं)

शुजाउद्दौला—हर्ज क्या है ? जब शादी ही करूँगा बेगम, तो यहाँ
आने में क्या हर्ज है । नाजनी, मैं आपसे कुछ बातें करने आया हूँ ।

छाया—पहचान लिया ? क्या वह भूलने की बात है ? पगली हो
पर भी मैं भूल न सकी ।

शुजाउद्दौला—तुम यहाँ कैसे आई ? जिनतउन्निसा कहाँ है ?

छाया—उम्मीद के साथ आये थे—नाउम्मीद हुए ? एक श्रीर
की का सत्यानाश न कर सके—क्यों ? आग के अन्दर रहते हो—
आग है आँच न लगेगी । सर्प के खिलाड़ी हो, सोचा है उसमें जहर
है । कभी यह भी हो सकता है ! हाः हाः हाः—बदमाश, कायर अमीर
इसलिए सोचा है आसानी से निकल भागोगे । असंभव है असंभव—
हो नारी जागो—असहाय अनाथ लड़की का सत्यानाश जिसने किया
—आज उसी के खून से उसके पापों का प्रायश्चित्त करो । यह छुरी
तने रोज सावधानी के साथ अपनी छाती में छिपा रखी थी—आज
लेक अपने लायक जगह पर यह आराम करेगी ।

(नवाब की छाती में छुरी भोक्तो है)

शुजाउद्दौला—(हाथ पकड़कर) बदजात, कौन है, दौड़ो—खून ।

छाया—फिर हाथ पकड़ा है—हा. हा. हा. लेकिन वह ताकत अब
इन हाथों में नहीं ।

(बाँदियाँ आती हैं)

सब—हाय हाय क्या हुआ—क्या हुआ या अल्लाह !

शुजाउद्दौला—जल्द वजीरों को खबर दो, पहरा बुलाओ ।

पहली—क्या हुजूर को ज्यादा चोट आई है ?

दूसरी—मैं अभी खबर करती हूँ ।

चौथा अङ्क

पहला दृश्य

मीर कासिम

मीर कासिम—गफूर के घर पर भी उनका कोई पता न लगा ।
इस तरह वेप बदल कर जङ्गल जङ्गल कहाँ तक भटकते फिरें ! फायदा
भी क्या ? वेगम और बच्चे शुजाउद्दौला की कैद में हैं । नवाबी
मसनद के नशे में मैंने उनकी हालत कितनी बदतर कर दी है । मेरे दुश्मन
के घर पर मेरी वेगम और श्रीलाद—और मैं ! मेरे इस सर की कीमत
लाख रुपये ! नवाब का सर ! कितनी कदर है ! वेश कीमती है ।
आबादी में जाने की हिम्मत नहीं—डर है । क्या जाने कोई पहचान ले ! जहाँ
भी जाता हूँ वहीं—खुदा की बद दुआ की तरह --बरबादी पीछे पीछे
दौड़ती है । मीर कासिम ! कासिम अली—अब भी जीने का कोई
शौक है ? दुनिया की किस सरहद पर किन पहाड़ों की दीवारों से घिरी
हुई, बेईमानों की नापाक नज़रों से बची हुई—फरिश्तों के पहरे के अन्दर
गुम्हारी नवाबी मसनद बिछी है, देखना चाहते हो ? चलो—चलो—ग्वून
और कीचड़ भरी इस गन्दी जगह को छोड़कर चलो उसी की तलाश में
चलें ।



देया । और आज इस सुनसान रेगिस्तान में मरती हुई यह पाक छूर तुमसे पानी माँग रही है, लेकिन तुम इतने बदकिस्मत हो कि वह पानी तुम उसे पिला न सके । परवरदिगार—मुझे नवाबी नहीं चाहिए । बेगम नहीं चाहिए ! औलाद नहीं चाहिए ! इज्जत नहीं चाहिए ! सिर्फ पानी से भरा हुआ एक बादल का टुकड़ा कहीं से हाजिर कर दे ! रहीम—रहम न, इस बदनसीब लड़की की जान बचा ।

जिन्नतउन्निसा—नहीं मिला—ज़रा पानी—आप नहीं पिला सके, पानी !

मीर कासिम—हँस रही हो, कुदरत तुम हँस रही हो ! इस मरती हुई लड़की को देखकर हँस रही हो ! रहीम, कहाँ है उसका रहम ? शैतान की कुदरत है—क्या करूँ ? कैसे इस लड़की को बचाऊँ ? मेरी बच्ची तुम कोन हो, मैं नहीं जानता, कभी तुम्हें देखा नहीं । तुम्हारे नाजुक चेहरे पर एक छिपा हुआ दर्द मैं देख रहा हूँ । क्यों मुझसे पानी माँगा ? पानी कहाँ से दूँ ? क्या इस बदनसीब मीर कासिम का जून तुम्हारे उन ठण्डे ओठों की प्यास बुझा सकेगा ? तो लो—अपनी छाती के खून को चुल्लू में भरकर मैं तुम्हारी प्यास बुझाऊँगा ।

(खुदकुशी करने को तैयार होता है)

गफूर (बाहर) —वह हैं हमारे नवाब ! नवाब साहब !

मीर कासिम—कौन ? पहचानी हुई आवाज—मरते वक्त कौन है यह ? दोस्त या दुश्मन ?

गुलनार—तुम्हारी हमशीरा ।

मीर कासिम—या रहीम रहमतुल्ला—तूने अपना रहम बदकिस्मत रो के न देकर क्या औरतों के दिल के अन्दर छिपा रक्खा है जिनके हाथ मौत को भी शिकस्त दे सकते हैं ? शायद इसी लिए दर्द । दुनिया में, मुसीबत के दिनों में तेरा रहम सिर्फ सच्ची असमतवाली औरतों के जिगर के अन्दर से बहने लगता है ।

गुलनार—अब कोई डर नहीं है, बच्ची की आँखें खुल गईं । आप क्रि न करे, नवाब साहब ।

मीर कासिम—चुप, नवाब साहब नहीं । 'नवाब' के नाम से मुझे अब नफरत है । इस वक्त से मैं हूँ सिर्फ 'इन्सान' । सिर्फ एक इन्सान की तरह हम रहेंगे, महलों और कोठियों में नहीं । गरीब किसान ने टूटी-फूटी भोपड़ी के अन्दर मैं, तुम और ये दोनो बच्चे । ऐयाशी का नशा, बड़प्पन का घमंड पैरों के तले कुचलकर—भूखे मुसीबतज़ादा गरीबों के अन्दर जिन्दगी की पहली बातों को भूलकर सिर्फ इस राख को लेकर हम जिन्दा रहेंगे कि हम इन्सान हैं—। जिन पर हुकूमत की है—उन्हीं की तरह इन्सान—और गफूर ! ! इन्सानों के भीतर एक फरिश्ता - बफादार—ईमानदार मुझे पनाह देनेवाले ! आज तुम्हारे ही फजूल—तुम्हारी ही नवाजिश से मेरी खोई हुई इज्जत, खोई हुई खुशी मुझे इस बालू भरे मैदान में वापस मिली । और तुम मेरी बच्ची । तुम कौन हो ? कहाँ जाओगी ? चलो हम पहुँचा देगे ।

जिबतउन्निसा —मालूम नहीं कहाँ जाऊँगी । जङ्गलों में कई रोज़ से घूम रही हूँ । भौल कैसे मॉगी जाती है, मालूम नहीं । पेट में दाना

गफूर—रस्ते में आते आते रूहेलों की बरबादी का तमाम किस्सा ना है। बेईमान बेवफा दीवान की कार्रवाई से ही ऐसा हुआ।

मीर क़ासिम—बेईमान और बेवफा हर जगह मौजूद है—अफ़नेस इनकी जड़ न मिटा सका।

गफूर—और सुना है हाफ़िज नाहव की पोती को शुजाउद्दौला ग़रफ़्तार करके ले गया है, लेकिन शैतान ने जब उस पर जुल्म करने की कोशिश की तो बहादुर लटकी ने उमकी छाती में छुरी भोंक दी। ग़लیم अभी मरा नहीं है। उसने हुक्म दिया है कि बदनसीब को चौक में बूले आम नगा करके टसी छुरी से टुकड़े-टुकड़े करके काटा जाय।

जिन्नतउन्निसा—और फै जुल्ला !

गफूर—फै जुल्ला कैद से फ़रार हो गया।

जिन्नतउन्निसा—अम्मीजान, आपने मेरी जान बचाई है। इसके ए जिन्दगी भर आपकी शुक्रगुजार रहूँगी। अब मुझे ख़ुश होने। इजाजत दीजिए। गुस्ताखी माफ़ फ़रमाएँ—उस बदनसीब औरत की दर्भरी आवाज मुझे बुलाकर कह रही है—“बदला इतक़ाम कैसे लिया जाता है, देख जा।” नहीं, मैं चुप नहीं बैठ सकती। अभी बेईमान दीवान जीता है। पटान औरत ! चल-चल ! जल्दी चल !

(जाती है)

गुलनार—यह क्या ! कहाँ जा रही हो. मेरी बच्ची, क्यों जा रही ? मनो !

दूसरा—सबक देने के खयाल से कि तमाम शहर देखे और डरे
आगे कोई ऐसी हिम्मत न करे ।

पहला—सबक ! अरे म्याँ, रहने भी दो । नवाबी खयाल है
जी मे आया कह दिया । कुत्तो से नुचवा दो, काट काट कर नमक
फूँक दो • यह कर दो वह कर दो ।

दूसरा—इसको, सुना है, कमर तक मिट्टी में गाड़ दिया जायगा
र हर रोज जिस्म का कोई न कोई हिस्सा काट लिया जायगा, आँख.
१. उँगली, हाथ •

पहला—नवाब की छाती में छुरी—कोई मामूली बात
डे ही है !

दूसरा—नवाब की मौत तो नहीं हुई । मामूली चोट आई है ।

पहला—वह-वह-वह जा रहे हैं ।

दूसरा—अरे हाँ म्याँ, ठीक वही मालूम होती है । चलो मज़ा देखे ।

(ज जीरो से जकड़ी हुई छाया को लेकर पहरेदार आते हैं)

पहरेदार—हट जाओ, हट जाओ ।

छाया—कोई न हटना, कोई न जाना । चलो. चलो, सब साथ में
चलो । तमाशा देखो—नवाब का जुल्म देखो, आज मैं कल तुम—
कोई न बचेगा ! मेरा क्या ? मैंने बदला ले लिया । हा हा हा. हाथ
रुड़ा था—ज़हरीली छुरी से उसी का बदला । ऐ भेडा, ऐ बकरो ! चलो,
देखने चलो । आज मेरी पारी है, कल तुम्हारी आयगी । तुम न देखोगे
तो देखेगा कौन ! अगर तुम जैसे मर्द पैदा न होते तो यह मज़ा कहाँ
दिखाई देता ?

लक्ष्मी०—रहमत की पोती ? कुछ समझ में न आया । घर बार ढोढे मुहत्त हो गई । मुसाहबी कर रहा था । मेरी ही बहन ने नवाब की छाती में छुरी भोंक कर अपनी जान रोई ! इसकी हत्या किसने की ? दुलारी दुलारी, मेरी प्यारी बहन आ, सरजू में तेरी देह को निमजित कर आज से गुलामी के काम से हस्तीफा ।

तीसरा दृश्य

फैजाबाद—दरबार

मुर्तजा खाँ और हैदर बेग

हैदर बेग—क्या समझे ?

मुर्तजा खाँ—समझना दुश्वार है । नवाब साहब का दिमाग खराब हो रहा है । खुद ही उसके कत्ल का हुक्म दिया और खुद ही हुक्म वापस भी लिया ।

हैदर बेग—हमेशा से ही मिजाज ऐसा ही रहा । बक्सर की लड़ाई के वक्त हम पर पूरा शुबह हो गया था । सोचा था हम दोनों को सख्त सजा भुगतनी पड़ेगी, मगर देखा न ? एकदम चुप्पी साध गये ।

मुर्तजा—हमारे खिलाफ कोई नुबूत भी तो नहीं था ।

हैदर बेग—उससे क्या बिगड़ता ? मेरा खयाल है, सब बड़ी बेगम की सलाह थी । बहुत ही अवलमद ओरत है । अगर नवाब साहब उनकी बात मान कर चलते तो आज यह नतीजा हासिल न होता ।

मुर्तजा—देखो, क्या रङ्ग खिलता है। इस तरह बेसत्री से दिन नते-गिनते तो थकान आ जाती है। जो होना हो वह जल्दी हो जाय तो अच्छा है।

(आसफउद्दौला आता है)

आसफउद्दौला—आप यहाँ हैं, मैं आप ही की तलाश कर रहा था। नवाब साहब की हालत बहुत खराब है। मैं तो मारे दबू के उस कमरे में घुस न सका। सआदतअली फिर भी भी-कभी अन्दर जा रहा है—वह हकीम के पास गया है, मैं आपके पास देने आया हूँ।

मुर्तजा खॉ—वक्त बहुत नाजुक है। सआदतअली का बाग-बार बाब के पास आना-जाना मतलब से खाली नहीं है।

आसफउद्दौला—सब बरबादी की जट है मेरी वालदा। बराबर वे मुझको नाराज करती रहीं। अगर उस नाराजगी के खयाल में कहीं मेरे तख्त से महरूम किया जाय तो कोई ताज्जुब नहीं।

हैदर बेग—हम भी यही सोच रहे थे।

आसफउद्दौला—अगर कहीं ऐसा ही किया तो हम उनके हुक्म की कोई परवा न करेंगे। मैं बगावत करूँगा। कानून तख्त का वारिस हूँ, क्योंकि एक तो मैं पहली औलाद हूँ और मेरी वालदा ही पट्टी बेगम हैं। आप दोनों इस सल्तनत के खास दो पाये हैं। मुझे उम्मीद है कि आप मेरा साथ देंगे।

हैदर बेग—कुछ समझे ?

आसफउद्दौला—खुश मालूम होता है !

मुर्तजा खाँ—क्या नवाब साहब की मन्शा उसे मालूम हो गई ?

आसफउद्दौला—चाहे जो करें, अगर तख्त से मुझे मायूस रखवा मैं खामोश न रहूँगा। आप अभी वज़ीरो और उमराओं से सलाह दरबार का इन्तजाम कीजिए। नवाब साहब की लाश कब्र में जाने पेश्तर ही मैं तख्त पर बैठूँगा। उनकी मौत की खबर बाहिर होने पेश्तर ही हम ऐलान करेंगे कि नवाब साहब ने मुझे तख्त पर बैठने आजत दे दी है।

मुर्तजा खाँ—यही अवलमन्दी का काम होगा।

हैदर बेग—तब सआदतअली को पहले ही गिरफ्तार करना होगा, तबसे वह बगावत न कर सके।

मुर्तजा खाँ—अभी उतना बढ़ना ठीक नहीं। (स्वगत) दोनों ने हाथ में रखना पड़ेगा। न मालूम कौन नवाब हो। पहले से सआदतअली ने नाराज कर देना ठीक नहीं। (प्रकट) तब चलिए, ढेर करना मुनासिब नहीं।

आसफउद्दौला—सिर्फ बालदा के सबब इतनी फिक्र करनी पड़ी। बराबर वे नवाब साहब के खिलाफ़ रही।

मुर्तजा खाँ—इसमें क्या शक ?

(सब जाते हैं)

फै जुल्ला—यह भी कोई मेरी तरह बदनसीब है—अफसोस के साथ रोता हुआ गा रहा है। मगर न मुझमें रोया जाता है और न गाया जाता है।

लक्ष्मी०—कौन इस अंधेरे में दीवाने की तरह घूम रहा है ?

फै जुल्ला—तुम कौन हो ? क्या तुमने देखा है ? देखा है ?

लक्ष्मी०—आँखें जब कपार पर मोजूद हैं तो जरूर देख लिया है।

फै जुल्ला—बतला सकते हो, जिस लड़की को सुबह एक शख्स ने गोली मारी थी, वह कहाँ दफनाई गई है ?

लक्ष्मी०—दफनाई गई है ? वह तो मुसलमान नहीं, हिन्दू थी। मैं उसकी बात क्यों पूछ रहे हो ?

फै जुल्ला—हिन्दू थी ? भूटा कहीं का ?

लक्ष्मी०—जब जाति में हिन्दू हूँ—पेशा नौकरी—फरम गुलामी का—बुशी शराब में तब जरूर भूटा—शे बार भूटा हूँ। उसके लिए कोई ख नहीं। परन्तु फिर भी बात सच्ची है। वह हिन्दू की लड़की थी, मुसलमान की नहीं। दफनाया नहीं, मैंने अपने हाथों उसे सगजू नदी में डाल दिया है।

फै जुल्ला—क्या कह रहे हो ? क्या वह जिनत न थी ? बोले, क्या वह जिनत न थी ? तब मैंने किसका खून किया ?

लक्ष्मी०—मेरी बहन—दुलारी का।

फै जुल्ला—तुम्हारी बहन ? मेरी जिनत नहीं ? मुझको पकड़ो। मैं गुनहगार हूँ—कातिल हूँ—सज़ा पाने का मुश्तहक हूँ। मुझको गिरफ्तार करा दो, मैं फारार अरामाई फैजुल्ला हूँ। बहुत इनाम हासिल करोगे। मैंने जिनत समझकर तुम्हारी बहन को मार डाला।

फै जुल्ला—यहाँ कैसे आये ?

लक्ष्मी०—बहुत बड़ा किस्सा है। आगरा पहुँचा; मन के माफिक साथी मिल गये, थोड़ा सा गाना-बजाना आता था, एक तबानफ का नखलची बना। इसके बाद घमता-फिरता शुजाउद्दौला के यहाँ मुसाहवी करने की नोकरी मिली। तब से यही हाल है—पीता खाता हूँ और मुसाहवी करता हूँ।

फै जुल्ला—क्या कभी घर वापस नहीं गये ?

लक्ष्मी०—नहीं। सोचा था जो दो रोज जीना है, ऐसे ही अँधेरे में बिता देगे। मगर भाग्य ऐसा था कि मरती हुई बहन को देगा, जिसने नवाब की छाती में छुरा भोका था।

फै जुल्ला—छुरा क्यों भोका था ?

लक्ष्मी०—क्या कहूँ ? मरते वक्त दुलारी ने कहा, नवाब ने उसका हाथ पकड़ा था, उस पर अत्याचार किया था। और मैं इतने दिनों से उसी की गुलामी कर रहा हूँ।

फै जुल्ला—अब कहाँ जाओगे ?

लक्ष्मी०—एक बार गाँव को जाऊँगा। देखूँ बूढ़ा बाप जिंदा हो तो कह दूँगा कि दुलारी ने बदला ले लिया। मैं उसका भाई मर्द होकर भी कुछ न कर सका। अच्छा, तुम भागो, तुम्हारा हुलिया निकला है।

फै जुल्ला—तुम्हारा गाँव कहाँ है ?

लक्ष्मी०—बरार में।

फै जुल्ला—रुमजोर पर ताकतवर का यह जुल्म ! क्या इसका कोई इलाज नहीं ? जिस कौम की लड़की जुल्म का इतकाम ले सकती है, उस

शुजाउद्दौला—याद कैसे करूँ—डर लग रहा है। वह छुरी लेकर गयी है।

वहू बेगम—यह सब न सोचिए, यही तो इन्सान की जिन्दगी है—
॥ खुदा मेरे शौहर की तरफ़लीफ़ मिया दे।

शुजाउद्दौला—क्या वह चली गई ?

वहू बेगम—कौन ? यहाँ तो कोई नहीं आया।

शुजाउद्दौला—हाँ, मैंने देखा है। तुमने नहीं देखा ? छुरी लेकर आने आई थी—हूँ। मुझे मारगी—मैं ठहरे नचाव ? उसकी क्या जाल—तुम कोन हो ?

वहू बेगम—आपकी खादिमा।

शुजाउद्दौला—कौन आमेतू। देखूँ, जरा अच्छी तरह देखूँ। नहीं, ने को जी नहीं चाहता। बराबर तुम पर मैंने जुल्म किया है—इस दि से मुखड़े को कभी इस तरह देखा न था। लेकिन क्या करूँ—वक्त रीव है, जाना ही पड़ेगा—काश फिर कहाँ—खैर, एक अर्ज है—

वहू बेगम—फरमाइए।

शुजाउद्दौला—मुझे माफ़ करना। अगर फिर जिन्दगी वापस मिलती तो तुमको शायद खुश कर सकता। और खुद भी खुश रहता।

वहू बेगम—मैं तो खुश ही थी—आप क्यों इस तरह मेरी खुशी लेकर ले जा रहे हैं। मैंने कितनी गुस्ताखियाँ कीं मगर आप सब आपफ़ करते रहे। मैं फिर मुआफी चाहती हूँ। अब कभी आपकी जी के खिलाफ़ न हूँगी। आप मुझे छोड़कर न जाइए। मैं क्या कर रहूँगी।

बहू बेगम—या अल्लाह, अब तो इनकी तकलीफ देखी नहीं जाती ।

(आसफउद्दौला, सआदतअली, हैदर बेग, मुर्तजा आते हैं)

आसफउद्दौला—(स्वगत) उँह कितनी बदबू (नाक में रुमाल लगाता है) (प्रकट) अम्मीजान, वालिद साहब का क्या हाल है ?

बहू बेगम—जरा चुप हैं । अभी सबको तलाश कर रहे थे । इस वक्त यदि हुजूर सो रहे हैं ।

मुर्तजा—आपका खयाल क्या है ?

बहू बेगम—खुदा हाफिज है ।

आसफउद्दौला—क्या मसनद के बारे में कुछ इरशाद फरमाया ?

बहू बेगम—सआदतअली जरा तुम हकीम माहब को फिर खबर करो।

सआदतअली—जो इरशाद ।

(जाता है)

बहू बेगम—आसफ के साथ आप जरा इधर आइए, मुझे कुछ बतानी है ।

(नवाब के पलंग से कुछ दूर पर सब खड़े होते हैं)

आसफउद्दौला—इरशाद ?

बहू बेगम—बेटा, तुमसे मेरी सिर्फ एक यही गुजारिश है । क्या उम्मीद कर सकती हूँ कि मेरे शौहरजी अब आखिरी सॉस लेना ही चाहते हैं, उनके सामने मेरी अरजी तुम मंजूर करोगे ?

आसफउद्दौला—फरमाइए ।

बहू बेगम—तुम इस मसनद को मंजूर न करो !

को। इसी में अवध की। भलाई है वज़ीर साहबान, आपकी क्या
प्य है ?

मुर्तजा खॉ—जो, कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

आसफउद्दौला—समझा, मैं आपकी औलाद नहीं। अब तक
कफ आप मुझे धोखा देती रही ! यह मसनद मेरी है—मैं इसकी
जमीद छोड़ नहीं सकता ! मुर्तजा खॉ, हैदर बेग, आप अभी दरबार
हाज़िर करें। मैं वालिद साहब के जीते जी मसनद पर बैठूँगा।

शुजाउद्दौला—कौन ? प्यारी आमेतू ! कहाँ हो ?

बहू बेगम—हाज़िर हूँ, सरकार ! (पास जाती है)

शुजाउद्दौला—क्या अभी तक वे नहीं आये ?

बहू बेगम—सब हाज़िर है, लेकिन हुज़ूर मेरी अरज़ी—

शुजाउद्दौला—नहीं नहीं, बेगम तुम मुझसे नाराज़ हो। तुम अब
नवाब की बेगम थीं, अब तुम नवाब की वालिदा हो। आसफ
आसफ !

आसफउद्दौला—अव्याजान !

शुजाउद्दौला—वज़ीर साहबान कहाँ है ?

आसफउद्दौला—खिदमत में सब हाज़िर है।

शुजाउद्दौला—आज से मसनद तुम्हारी है। आमेतू, तुम्हारा कर्ज
अदा हो गया। बेगम, कहाँ हो ?

बहू बेगम—हाज़िर हूँ सरकार।

आसफउद्दौला—आप सब ने वालिद साहब का हुक्म सुना ?

मुर्तजा खॉ और हैदर बेग—जी हाँ।

झावर है। मुझे यह गिरफ्तारी मजूर है। मगर आपका खयाल गलत, मुझे मसनद का लालच कभी न था।

बहू बेगम—ठहरो। आसफ, अपनी नवाबी का पहला हुक्म अधूरा छोड़ो। साथ में बदनसीब वालदा को भी गिरफ्तार करो। शायद दारे वालिद की रूह अभी तक इस चहारदीवारी के बाहर नहीं गई है। जाने के पहले सुन जायें कि सआदतअली अकेला नहीं, साथ में फकी वालदा भी गिरफ्तार हैं। मैंने ही इस मसनद को सआदतअली को। की गुजारिश की थी। सआदतअली का कोई कुसूर नहीं। चलो दतअली, मैं ही तुम्हारी बदनसीबी का बायस हूँ। चलो एक ही दरसाने में बैठकर वालदा के दिल के प्यार से शायद तुम्हारी कुछ फ्लीफ दूर कर सकूँ।

सआदतअली—वालदा साहबा, नवाबी! मसनद से आपके दिल की उनद कहीं बेश फीमत है। मैं खुश-नसीब हूँ।

बहू बेगम—बेटा, बचपन में ही तुम्हारी वालदा का इंतकाल हो या। अब तक अपनी छाती का खून दो भूखे बच्चों को बराबर हिस्से में ती रही। आज शौहर के इंतकाल के साथ उन दो बच्चों में एक खो या। चलो, अब तुम अकेले ही मेरी उस खाली जगह को पूरा करो।

(सआदत के साथ जाती है)

आसफउद्दौला—चलिए—दफन के पहले ही दरबार का इन्तजाम किया जाय। यह मेरी वालदा नहीं दुश्मन है।

11

म चुप थे, क्योंकि हम गरीब हैं। लड़की ने रास्ता दिखा दिया है—
जोने बदला ले लिया है। घर का ग्योवा हुआ लड़का वापस आ गया
है। अब क्या चिन्ता है ?

(लक्ष्मीप्रसाद आता है)

लक्ष्मी०—नगर में आग लग गई है। बड़े-बड़े प्रधान लोग
कह रहे हैं कि हम दीवान को मालगुजारी नहीं देंगे। फैजुल्ला साहब
लौट आये हैं, हम उन्हीं की तरफ से लड़ेंगे।

फैजुल्ला—फिर भी हमें धीरे-धीरे आगे बढ़ना होगा। पैजावाद
से फौज आने के पश्चात् ही हमें दीवान को सजा देनी पड़ेगी। मैं बड़े
का भरोसा नहीं करता: तुम गरीब हो और मुझे तुम्हारा ही भरोसा है।

विठ्ठलदास—बराबर, बगैर और बरेली की गिराया सब तुम्हारे
साथ है।

फैजुल्ला—बरेली के सिपाही सब तुम्हारी तरफ से लड़ेंगे। मैंने
गीत गाते-गाते उनको तुम्हारी हालत सुनाई—वे तो सब रो दिये। वे
कहते हैं कि अली अहमद का लड़का फैजुल्ला ही उनका राजा है।
सुरेदार-जमादार सब तुमसे आत्म मिलेंगे। हथियार और बारूद की
कमी न होगी। अब चाहिए सिर्फ आदमी।

विठ्ठलदाम—उसके लिए कोई फिक्र नहीं। हमने जवान दी है।
अमीरों की तरह हम कूट नहीं धोखते। हम अपना सर देंगे। हम
बापने कटे सरो के ऊपर तुम्हारी मगनद बिछावेगे। तुमने हमारी लड़की

सब रङ्ग से, सब ढङ्ग से सब जङ्ग से

हो फतह, हो फतह, हो फतह

प्यारा अपना आसफशाह

उनका कहना, क्या बल्लाह !

आन के, बान के, शान के—वाह वाह वाह !

वाह वाह वाह !

वाह वाह वाह !

(सब जाती है)

(आसफ और मुर्तजा आते हैं)

आसफउद्दौला—क्या मुल्लाओं ने फतवे पर दस्तखत कर दिये ?

मुर्तजा खाँ—बिला दस्तखत लिये क्या मैं छोड़नेवाला हूँ—उन्होंने फतवा दिया है कि आपकी बालदा के पास जो कुछ भी जर-जायदाद है, वह सब आपके बालिद साहब मरहूम की है, इसलिए उस पर आपका पूरा हक है। फर्क यही है कि यह जायदाद बड़ी बेगम साहबा ने बिनामी में अपने नाम लिखा रखली है। अगर आपको जरूरत पड़े तो आप उस जरो-जायदाद पर अपना कब्जा कर सकते हैं। यह लीजिए फतवा।

आसफउद्दौला—मैं इसी का इन्तज़ार कर रहा था। आप तो मेरी बालदा के बरताव से बाकिफ हैं। उन्होंने सोचा था कि सन्नादतअली को मसनद पर बिठा कर खुद सल्तनत की बागडोर अपने हाथ रखेंगी। फिर

आसफउद्दौला—हॉ-हॉ—लेकिन—रंग, जैसा मुनासिब समझो ।
मुर्तजा—जो इरशाद ।

(एक नोकर आता है)

नोकर—बरेली के दीवान व्यास राय हुजूर को सलाम कहते हैं ।

आसफउद्दौला—व्यास राय ! हाजिर करो ।

(नोकर जाता है)

मुर्तजा खाँ—आज दो साल से ग्हेलों की मालगुजारी दिल्ली की सरकार में पहुँचाई नहीं गई । मुझे ऐसा मालूम होता है कि यह दीवान की या तो लापरवाही है या नालायकी ।

आसफउद्दौला—इधर भी मुसीबत है । रुपये की कमी है, पर चारों तरफ से माँग है । आमदनी से ज्यादा है मेरा खर्च । कोई माँगता है तो मुझसे इनकार करते नहीं बनता ।

मुर्तजा खाँ—आप जिस लापरवाही के साथ ज़रान करते जा रहे हैं, उसमें रुपये की कमी का होना कोई ताज्जुब की बात नहीं है ।

(व्यास राय आता है)

व्यास राय—नमाव आसफउद्दौला साहब की जय हो ।

आसफउद्दौला—क्या खबर है, राय माएय ?

व्यास राय—हुजूर, दो साल से मालगुजारी नहीं भेज सका । अकाल ही इसका प्रधान कारण था लेकिन अबकी हालत और खराब है ।

आसफउद्दौला—अच्छा, आप जाकर डेरे पर आराम करें, मैं सोच
र अपनी गय जाहिर करूँगा।

व्यास राय—हुजूर की दया से ही ज़िन्दा हूँ। स्वर्गीय नयाब साहब
देस्त कहकर मेरे साथ हाथ मिलाया था। अहा सोचते रोमाच हो जाता
। दया के अवतार थे। और आप तो हुजूर कहावत ही मशहूर
गई है—“जिसको न दे मौला, उसे दे आसफउद्दौला।” दिल्ली के
दशाह को भी किसी ने यह सितारा नहीं दिया—सलाम हुजूर—आदाब
जीर साहब।

(जाता है)

आसफउद्दौला—यह एक और आफत है। इसके लिए भी मेरी
लिदा ही ज़िम्मेदार है। उन्होंने ही फौजुल्ला को रिहा किया था। इस
गावत को दवा देना बहुत जरूरी है। आप देर न कीजिए। रुपये की
ख़्त जरूरत है। औलाद और बालदा में भगड़ा—आप ही से काम
टँक होगा। मेरा जाना मुनासिब नहीं।

(जाता है)

मुर्तज़ा खाँ—सुना है, बेगम के पास बहुत रुपया है। तुम्हारा न
जाना ही मुनासिब है। शायद आधे रुपये को मैं रास्ते से ही हटा
नऊँ। खुदा हाफिज।

(जाता है)

(एक लड़का आता है)

लड़का—अम्मीजान, इधर आकर देखिए न ? दूकान में कितनी मेठाइयाँ रखी हैं । जमादार, ला दो न वहाँ से कुछ । हमें भूख लगी है ।

दूसरी बेगम—जो रास्ते से निकलेगा उसी को मारंगी । मारो मारो—
तयरो से मारो सब को -- देखो न, ये लोग मले में जान्नायर घूम रहे हैं
और हम यहाँ सूख रही हैं । मारो—मारो ।

तीसरी बेगम—इस नायब को पहले खत्म करो । खाने का इन्तजाम
नहीं कर सकता, बड़ा नायब बना है ।

खोजा—बेगम साहबान—सबमुन मुझे मार डालिए । यह तो अब
देखा नहीं जाता, मगर काश, मुझे मारने पर भी आपका पेट भरता ।

(बाहर)—खुर्द महल की छत पर से पत्थर आ रहे हैं । राही !
होशियार, होशियार !

(बाहर)—दूकाने बन्द करो, दूकान बन्द करो ।

(बाहर)—हट जाओ, हट जाओ नटी बेगम साहबा का तामजाम
ना रहा है—“होशियार होशियार, सवारी सरकार”—“होशियार
होशियार ।”

खोजा—यह क्या बड़ी बेगम साहबा ? आप सब मंत्र करो, मैं अभी
पाटक रोलाकर आता हूँ ।

(जाता है)

(रूत से लथपथ एक बच्चा आता है)

बच्चा - अम्मीजान, अम्मीजान कहों हैं ! बहुत चोट आई है—आग
सामने अँधेरा हो रहा है ।

तीसरी बेगम — बेटा, मेरे लाल, कैसे चोट आई ?

बहू बेगम—(गोद में गिरकर) हाय अल्लाह—कैसे लगी ! पानी
पाओ—पानी-पानी—(अपना ओढ़ना फाड़कर पट्टी बाँध देती है)

दूसरी बेगम—यह है पानी ।

बच्चा—उफ् जल रहा है ।

बहू बेगम—कैसे चोट आई बेटा ?

बच्चा—मैं फाटक से बाहर जा रहा था, एक खोजे ने पत्थर से मेरा
सर फोड़ दिया ।

बहू बेगम—बखशी ! देखो किस जानवर की यह शैतानी है । बद
समीक़ जानता नहीं कि यह कौन है । नवाब शुजाउद्दौला के साहबजादे !
उसको कड़ी सजा दी जाय । सुनो, फौरन हकीम साहब को खबर करो ।

चाँथा दृश्य

बरेली—दीवान की कोठी

[दीवान सो रहा है । गुजारी आती है]

गुजारी—उठते भी हो या नहीं ? घर में डाका पटा है ।

व्यास राय—डाका-डाका ! खजाने की चाबो ! सिपाही-पहरा

पाँचवाँ अङ्क

(शहर)—अल्लाहो अकबर अल्लाह अकबर—कहते हैं ।
 व्यास राय—हाय राम—ननमुच ग्रा गय सिपाही मियर ।

(जमादार आता है)

जमादार—क्या है ?

व्यास राय—हुजूर रहते डाका कैसे पड़ा ?

जमादार—जी हुजूर, डाका पड़ा नहीं है उनकी हुजूर है

व्यास राय—क्या कहते हो ?

जमादार—हुजूर, बन्दूक को उलटा पकड़ना सिखाया है न लड़ने
 आवेंगे उनकी तरफ निशाना नहीं । जो हुक्म देंगे, निशाना उनकी तरफ
 होगा । शहर के सब सिपाही, पहरेदार फैजुल्ला साहब की तरफ हैं—आप
 आपके मगज में ।

व्यास राय—ओ समझा, विद्रोह, विद्रोह—ठहरो, सरकारी फौज आ
 गी है तब देखेंगे ।

(फैजुल्ला और सिपाही आते हैं)

फैजुल्ला—वैदमान दीवान । अपनी बेवफाई का नतीजा अब
 पाओगे ।

व्यास राय—मारा मत माना, जान ने मृत मारा । बहुत दूर लगता है
 हुजूर । मारा नहीं । मरीच बेचारी राई हो जायगी ।

जमादार—पहचान रहे हैं दीवान साहब, ये असली फैजुल्ला
 नकली ! यही हमारे असल नवाब हैं ।

जियेगे। बदलसीबो को सरो का खम्भा देखकर समझने दो कि गानवत का नतीजा क्या है ?

आसफउद्दोला—अगर दिल्ली से मदद न आती तो मामयाब' मिल करना आसान न होता। मगर फिर भी यह नज़र मिलना किनार है !

हैदर बेग—बरा और बरोच में एक भी चाल मर्द जिन्दा नहीं है गली हाथ तोपों के सामने कट्टे-मकोटों की तरह आका मर गये। अगर तुना है कि बरा की आँखों में लड़ने का सामान कर रही हैं।

आसफउद्दोला—हाँ, अब यही बाकी है, जनानी फौज।

हैदर बेग—गोँवों के सामने नाके पड़े हैं। बाजार बन्द हैं। कै ज नखे रहेंगे ? आखिर उन्हें फैं जुल्ला को हमारे हाथ सौंपना ही पड़ेगा।

(फैं जुल्ला आता है)

फैं जुल्ला—फैं जुल्ला को आपके हाथ सौंप देने लायक नमकहराम में एक भी न मिला इसी लिए खुद गिरफ्तार होने के लिए हाजिर हुआ। मुझे कैद करो चाहे कत्ल करो—जिससे तुम्हारे जुल्म और लाठी का यही स्वात्मा हो जाय। अब यह शैतानी जुल्म देखा ही जाता।

हैदर—सचमुच फैं जुल्ला ही तो है—हुज़ूर हुक्म !

आसफउद्दोला—अभी कैद करो उसके बाद सजा।

हैदर—पहरेदार !

आसफउद्दौला—कौन है यह औरत ?

बहू बेगम—आपका, पहचाना ?

आसफउद्दौला—आदाब अम्माजान, आप ! यहाँ ?

बहू बेगम—अम्माजान कहते शर्म न आई । तुम्हारे ही हुक्म मुर्तजा खों ने मेरा महल लूट लिया—मुझे रास्ते की भिखारिन बनाया । छाती पर तुम्हें सुलाकर एक रोज मैंने विद्विष्ट की खुशी हासिल थी, जिस छाती पर सुलाकर तुम्हें मैंने जिन्दगी का ख़ाव देखा अपनी बालदा की उस छाती पर तुमने कितनी सफ़्त चोट पहुँचाई—क़ारा तुम जानते ?

आसफउद्दौला—भगर अम्माजान, मैंने तो मुर्तजा से यह नहीं कहा कि वह आपके खादिम पर हाथ उठाये या आपका सारा महल लूट ल । मैंने सिर्फ़ उसे इतना ही हुक्म दिया था कि मुल्लाओ का फतवा दिखाकर ख़जाने पर दखल करे । अब देख रहा हूँ कि सआदतअली ने उसे मुनासिब सजा दी है ।

बहू बेगम—सआदतअली ने मेरे पेट की औलाद न होने पर भी औलाद का काम किया और तुमने मेरी औलाद होकर भी मेरी तौहीन की । खेर, नवाब साहब ! इस वक्त मैं दौड़ी आई हूँ आपके पास एक भिखारिन की हैसियत से । सुना है, ख़ैरात में आपने नाम हासिल किया है । मैं भी ख़ैरात माँगने आई हूँ । क्या वह ख़ैरात मुझे आप देंगे ? बालदा को नहीं—एक मँगनी को ।

आसफउद्दौला—बालदा साहबा, यह आप क्या फ़रमा रही हैं—हुक्म दीजिए । खादिम हाज़िर है ।



आसफउद्दौला—तो क्या आज मैं सचमुच अपनी बालदा से मायूस हुआ ?

वहू बेगम—नहीं आसफ, अब तक तुम बालदा की जिस हमदर्दी से मायूस थे, वह तुम्हें आज वापस मिली ।

—

छठा दृश्य

पहाड़ों से घिरा हुआ जङ्गल

[बहार और अजीमन]

बहार—भाई, तुम यहाँ अकेले थोड़ी देर खेलते रहो । मैं भीख माँग लाऊँ । धूप में जाने में तुम्हें तकलीफ होगी ।

अजीमन—रोज तो हम दोनों जाते हैं—गीत गाकर भीख माँगते हैं । आज आप अकेले क्यों जायेंगे ?

बहार—बादशाह के खुफिया चारों तरफ घूम रहे हैं । कोई शुबहा करेगा तो मुझे अकेला ही पकड़ेगा ।

अजीमन—भाई जान, गफूर भाई आजकल क्यों नहीं आते ?

बहार—आते हैं किसी-किसी रोज, रात में—छिपकर । हम यहाँ पर छिपे हैं, कोई शक न करे । इसलिए रात में गाँव से पोशीदा तौर पर आते हैं ।

अजीमन—पहले तो गफूर भाई खाने को देते थे । हम भीख नहीं माँगनी पड़ती थी । अब वे क्यों नहीं देते ?

ग़ार—वक्त ज्यादा हो रहा है। तुम जरा छिपकर रहो। मैं भीग-भीग लाऊँ। शाम के पहले ही लौट आऊँगा।

अजीमन—आप जाइए। मैं लिए फिक्र न काजिए। इधर तो कोई शेर के डर से आता भी नहीं और मैं उस शेर की गल ओढ़ घूमूँगा। कोई पहचान नहीं सकेगा। अच्छा, हम दोनों उम्र गाने का तो कम से कम एक साथ गा लें। उसके बाद आप चले जाइएगा।

(दोनों गाते हैं)

एक पैसा, पावभर आटा, दे खुदा की राह पर
अल्लाह तुझको बेदा देवे, दे खुदा की राह पर।
ते अमीरो, हम गरीबों की तरफ देखो जग
अल्लाह तुझको दौलत देवे, दे खुदा की राह पर
भूने वालिद वालदा मजबूर है, बीमार है
एक पैसा, पावभर आटा, दे खुदा की राह पर।
अल्लाह तुझको चैन देवे, दे खुदा की राह पर।

अजीमन—अच्छा भाई जान, आप तशरीफ ले जाइए। मैं गेज जैसे सब जानवरों को डराया करता हूँ, उसी तरह डराऊँ।

(जात है)

बहार—मेरा भोला भाई ! इन तकलीफों को बरदाश्त करना है -
मगर हर वक्त हँसता हुआ। कभी कहता नहीं कि “मुझसे अर्थ नहीं सटा जाता।” वालिद साहब का दिमाग खराब हो गया है—कभी अम्मीजान को मारने जाते हैं, कभी गल्ले की तरह पेटकर रहते हैं।

(बहार आता है)

बहार—जङ्गल में गोली की आवाज कैसी ? अजीमन की आवाज सुनाई दी थी न ? अजीमन—अजीमन—भाई—वह भाग कोन गया ?

अजीमन—भाईजान, भाईजान ! मैं मर रहा हूँ ।

बहार—(दोड़कर अजीमन को छाती से लगाता है) अज-
जिस दुश्मन ने तुम्हारा यह हाल किया ?

अजीमन—रोज़ यह शेर की खाल पहनकर जङ्गल में घूमता हूँ । छोटे-छोटे जानवरों को डराता हूँ । आज एक शिकारी ने गोली मार दी । वह भाग गया ।—प्यास—छाती सूख रही है—बड़ी प्यास ! भाईजान, आपका चेहरा धुँधला मालूम होता है ।

बहार—अजीमन, अजीमन, हमको छोड़कर चले ! दोनों गिट्टियाँ भर लो । मीर कासिम के दो छोटे लड़के—उनमें से एक शिकारी ने गोली का निशाना बना । मैं क्यों जिन्दा हूँ ! मेरे भाई पर गोली चलाने-वाले मिहखान ! अगर नजदीक कहीं हो तो मेहखानी कर एक गोली मुझ भी मार दो । बड़ी नवाजिश होगी । दोनों भाई एक साथ भीख मांगते थे, अब एक साथ ही मर जायेंगे ।

अजीमन—भाईजान, अम्मीजान को न देन सका । अम्मीजान को सलाम नहीं कर सका । उनसे मत कहना कि मैं मर गया हूँ । बेचारे रोते रोते मर जायेंगे । कहना मैं रो गया । बड़ी प्यास—प्यास । भाईजान-भाईजान सलाम—ओह !

यह क्यों कह रही है। कि तुम हमारे गले पर बोझ बना हो ?
यह तो तुम्हारी बदनसीर्षी है और हमारी खुशकिस्मती ।
जदमत भी हम तुम्हारी कर सके हैं ।

जिन्नतउन्निसा—नवाब साहब का इरादा नेपाल जाने का है ।
तो तो छिपकर रहना न पड़ेगा । हम वहाँ ऋचनेगी ?

अब तक तो चले जाते, मगर नवाब साहब की तबियत एकदम
गम हो गई । कभी तो विलकुल अच्छे रहते हैं, फिर कभी कभी
बिलकुल दीवाने की तरह ।

जिन्नतउन्निसा—गफूर भाई भी कई रोज़ से नहीं आये । नवाब
साहब का एक शाल बेचने के लिए ले गये थे न ?

गुलनार—गायद अभी तक बेच नहीं सके । फिर, आन भी
बहुत होशियारी से पढ़ता है । बादशाह का हुक्म है कि जो उनका
गिरफ्तार करा देगा, उसे लाख रुपया इनाम मिलेगा ।

जिन्नतउन्निसा—अच्छा शाम हो गई—पानी भर लाऊँ ।
(जाती है)

गुलनार—शाम हो गई—जिन्दगी की शाम फिर होगी ।
(बाहर मीर कासिम का गफूर अली, गफूर अली कहकर निल्लाना।
गुलनार—नवाब साहब उठ बैठे । आन फिर तबियत कुछ बेठिक—
मालूम होती है । या खुदा मेरे शौहर का चङ्गा कर

(मीर कासिम आता है)

मीर कासिम—तुम कौन हो ? गफूर कहा है ?

बिखर रखें। हाथों में हथकड़ियाँ जकड़ दो नहीं तो ऊँची चीजों और वस्त्रों को न मार डालूँ।

गुलनार—आप ऐसा क्यों करते हैं ?

मीर कासिम—मालूम नहीं, एक जिन् आता है, में उसे रोक नहीं पाता। एक काला—बड़ा—जिन् मेरे कानों में कहता है—सब को मार लो; खून की नदी बहा दे। बङ्गाले की मिट्टी खून से लाल हो गई—तासी का मैदान लाल हो गया। नवाबी ममनद खून की नदी के ऊपर बह रही है। यहाँ बाकी क्यों रहे—बेईमानों की जड़ खत्म कर दो।

गुलनार—बच्चे तुम्हारी ऐसी हालत देख कर डरते रहते हैं। मुझे बरदाश्त हो गया है। मुझे चाहे मार डालो, काट डालो, परवा नहीं। मगर उन बेचारों के मुँह की तरफ देखकर तो कम से कम अपने को संभालने की कोशिश करो।

मीर कासिम—कोशिश तो करता हूँ, दिन-रात अपने साथ लड़ता हूँ। ऐसी लड़ाई बङ्गाले में नहीं लड़ी, रोहतासगढ़ में नहीं लड़ी, बरसर में नहीं लड़ी। मगर क्या करूँ ? हार जाता हूँ। तुमसे मेरी अर्ज है—तुम मुझे माफ करो। मेरे लिए तुमने बहुत कुछ बरदाश्त किया है। तुम नवाबजादी हो, नवाब की बेगम हो। तुम्हारी असमत् और वफादारी की जोड़ नहीं—मेरी एक गुजारिश है—

गुलनार—फरमाइए।

मीर कासिम—एक रस्ती से मुझे बाँधकर रखो—हाथों और पैरों में बेड़ियाँ डाल दो जिससे कभी तुम्हारे ऊपर हाथ न उठा सकूँ। मेरा मन काबू के बाहर है।

मीर कासिम—ऐं यह क्या हुआ है ! रोती क्यों हो ? बात क्या
! जग समझा दो । ज़मीन पर वह कौन पड़ा है ?

बहार—अब्याजान, अज़ीमन दुनिया से चला गया ।

गुलनार—क्या आपकी समझ में नहीं आ रहा है ? मेरा अज़ीमन—
उरा खुदा !

मीर कासिम—अज़ीमन—अज़ीमन—मर गया ? नवाब मीर कासिम
! नवाबजादा अज़ीमन ? कासिमअज़ी—उसका बालिद कहा है ?
हाल, बिहार उड़ीसा का नवाब मीर कासिम कहाँ है ?

बहार—अब्याजान, जरा तो खामोश रहिए । क्यों भल रहे हैं कि अ—
उद नवाब मीर कासिम है ।

मीर कासिम—मैं नवाब मीर कासिम हूँ ? क्या सच है ? तो क्या
ह सच है ? और तू मेरा बहार है और जमीन पर जो लेटा है वह
रा अज़ीमन है ? अज़ीमन—अज़ीमन ! उठो बेटा—जमीन पर क्या
दे हो बेटा ?

बहार—अब्मीजान, एक शिकारी ने शेर के धोरने में मेरे भाई को
गोली मार दी ।

गुलनार—अल्लाह, बदनसीब गुलनार को तू इसके साथ ही
ठा ले — खुदा !

(छाती पीटती है)

मीर कासिम—अज़ीमन—अज़ीमन !

रता हूँ कि सिर्फ आपके शौहर को ही नहीं बल्कि जिस किसी न म
 रण बेवफाई की है, मैंने अपने दिल से सब को माफ किया।
 दिले मे तुम सब मुझे माफ करना। तुम फैजुल्ला, तुम गफर, तुम
 गुलनार ! मैंने खुद जलते-जलते सपनों जलाया है—मुझे माफ करना।
 शहर ! मेरी जिन्दगी की बहार ! अगर जिन्दा रहो तो कभी नवारी का
 जाहिश न करना। सिर्फ एक इन्सान बनने की कोशिश करना।
 गफूर ! मुझे पकड़ो—पकड़ो। दिल धवस रहा है। मेरी छाती को खर
 रानकर पकड़ो—और जोर से—और जोर से। छाती की एक तरफ है
 शहर, दूसरी तरफ था अजीमन। बिल्कुल गाली हो गई वह जगह।
 पकड़ो—पकड़ो !

गुलनार—हाय अल्लाह, यह मेरे नसीब में क्या बदा है !

फैजुल्ला—नवाब साहब ! नवाब साहब !

बहार—अब्याजान ! अब्याजान !

मीर कासिम—तब अंधेरा होता जा रहा है। ओफ ! सबको
 सलाम—सलाम—अल्लाह !

(मृत्यु)

गफूर—आह ! सुत्तम—रहम—‘या रहीम !

गुलनार—क्या एक ही दिन में बच्चे के साथ मैंने अपने शौहर को
 भी तोया ? हाय, खुदा ! मुझे आप साथ लेने चलिए।

बहार—अब्याजान ! अब्याजान !

बहू बेगम—उठो बहन, बहार को छाती पर उठा लो। दुसबअली—

